وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِىۡ‌ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَةٌ ۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّىۡ‌ ؕ اِنَّ رَبِّىۡ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿۵۳﴾

(५३) तथा मैं अपनी इन्द्रियों की पवित्रता का वर्णन नहीं करती ।[1] निःसंदेह मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है,[2] परन्तु यह कि मेरा प्रभु ही अपनी दया करे।[3] निश्चय ही मेरा पालनहार क्षमाशील कृपानिधि है।

وَقَالَ الۡمَلِكُ ائۡتُوۡنِىۡ بِهٖۤ اَسۡتَخۡلِصۡهُ لِنَفۡسِىۡ‌ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الۡيَوۡمَ لَدَيۡنَا مَكِيۡنٌ اَمِيۡنٌ ﴿۵۴﴾

(५४) तथा राजा ने कहा उसे मेरे समक्ष लाओ कि मैं उसे अपने निजी कार्यों के लिये नियुक्त कर लूँ ।[4] फिर जब उससे वार्तालाप करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से सम्मानित तथा विश्वस्त हैं ।[5]

---

[1]इसे यदि आदरणीय यूसुफ़ का कथन स्वीकार कर लिया जाये तो विन्रमता के रूप में है, अन्यथा स्पष्ट रूप से प्रकट है कि उनकी पवित्रता हर प्रकार से सिद्ध हो चुकी थी। तथा यदि मिस्र के मंत्री की पत्नी का कथन है (जैसाकि इमाम इब्ने कसीर का विचार है) तो यह वास्तविकता पर आधारित है क्योंकि उसने अपने पाप तथा यूसुफ़ के बहलाने-फुसलाने को स्वीकार कर लिया।

[2]यह उसने अपनी त्रुटियों की कष्ट कल्पना अथवा उसका कारण बताया है कि मनुष्य का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता तथा उकसाता है।

[3]इन्द्रियों के छल से वही सुरक्षित रहता है जिस पर अल्लाह तआला की कृपा हो। जिस प्रकार कि आदरणीय यूसुफ़ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

[4]जब राजा (रय्यान पुत्र वलीद) पर यूसुफ़ के ज्ञान तथा गुणों के साथ उसके आचरण की महत्ता तथा पवित्रता स्पष्ट हो गयी, तो उसने आदेश दिया कि उन्हें मेरे समक्ष प्रस्तुत करो, मैं उन्हें अपने लिये चयन करता हूँ अर्थात अपना निकटवर्ती तथा विशेष सलाहकार नियुक्त करना चाहता हूँ।

[5] مَكِيْنٌ (मकीन) का अर्थ है पदाधिकारी أَمِيْنٌ (अमीन), राज्य का भेद जानने वाला।

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْاَرْضِۚ اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٥﴾

(५५) (यूसुफ़ ने) कहा कि आप मुझे देश के कोष पर नियुक्त कर दीजिये ।[1] मैं रक्षक तथा जानने वाला हूँ ।[2]

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِۚ يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा इस प्रकार हमने यूसुफ़ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे ।[3] हम जिसे चाहें अपनी कृपा पहुँचा देते हैं । हम पुण्य करने वालों के कर्मों का फल नष्ट नहीं करते ।[4]

---

[1] خزائن (ख़ज़ाएन) बहुवचन है خزانة (ख़ज़ाना) का । ख़ज़ाना का अर्थ है 'कोष' अर्थात ऐसे स्थान को कहते हैं जहाँ वस्तुऐं सुरक्षित रखी जाती हैं । धरती के कोष से तात्पर्य वे भण्डार हैं जहाँ अनाज एकत्रित किया जाता था । इसकी व्यस्था अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये व्यक्त की कि निकट भविष्य में (स्वप्न के फल को देखते हुए) जो सूखे के वर्ष आने वाले थे, उससे निपटने के लिये विशेष प्रबन्ध किये जा सकें तथा अनाज की पर्याप्त मात्रा सुरक्षित रखी जा सके । सामान्य अवस्था में यद्यपि पद तथा पदवी की इच्छा उचित नहीं है, परन्तु आदरणीय यूसुफ़ के इस व्यवहार से ज्ञात होता है कि विशेष अवस्था में यदि कोई व्यक्ति यह समझता है कि राष्ट्र तथा देश के सामने जो कठिनाईयाँ हैं उनसे निपटने में मनुष्य में उत्तम योग्यताऐं हों तथा वह अन्य लोगों में न हो, तो वह अपनी योग्यता के अनुसार पद तथा पदवी की माँग कर सकता है । इसके अतिरिक्त आदरणीय यूसुफ़ ने पद तथा पदवी की कामना नहीं की । परन्तु जब मिस्र के राजा ने स्वयं प्रस्तुत किया तो फिर ऐसे पद की इच्छा व्यक्त की जिसमें उन्होंने देश तथा राष्ट्र की सेवा के पक्ष को अधिक प्रत्यक्ष देखा ।

[2] حفيظ मैं उसकी उस प्रकार सुरक्षा करूँगा कि उसका कोई अपव्यय नहीं करूँगा, عليم उसको एकत्रित करने तथा व्यय करने एवं उसके रखने तथा निकालने का उत्तम ज्ञान रखता हूँ ।

[3] अर्थात हमने यूसुफ़ को धरती पर ऐसी शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान किया कि राजा वही आदेश करता जो आदरणीय यूसुफ़ करते, तथा मिस्र की धरती में इस प्रकार अधिकार चलाते जिस प्रकार मनुष्य अपने घर पर चलाता है तथा जहाँ चाहते वहाँ रहते, सम्पूर्ण मिस्र उनके आधीन था ।

[4] यह जैसे कि बदला था उनके धैर्य का जो भाईयों की क्रूरता तथा अत्याचार पर उन्होंने रखा तथा उस सुदृढ़ता का जो ज़ुलेखा के पाप के निमन्त्रण के समक्ष प्रयोग किया तथा

(५७) तथा निःसंदेह ईमानदारों तथा परहेजगारों का पारलौकिक बदला अति उत्तम है।

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

(५८) तथा युसुफ़ के भाई आये एवं यूसुफ़ के पास गये, तो उसने उन्हें पहचान लिया तथा उन्होंने उसे नहीं पहचाना ।[1]

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنكِرُونَ ﴿٥٨﴾

(५९) तथा जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे पिता से है, क्या तुमने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ

وَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخٍ لَّكُم مِّنْ أَبِيكُمْ ۚ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي الْكَيْلَ وَأَنَا

उस पूर्ण दृढ़ता का जो कारागार के जीवनकाल में अपनाये रखा। आदरणीय यूसुफ़ का पद वही था जिस पर पूर्व मिस्री अजीज़ आसीन था जिसकी पत्नी ने आदरणीय यूसुफ़ को बहकाने का असफल प्रयत्न किया था। कुछ लोग कहते हैं कि राजा आदरणीय यूसुफ़ की शिक्षा-दीक्षा के कारण मुसलमान हो गया था। इसी प्रकार कुछ लोग कहते हैं कि मिस्री अजीज़ जिसका नाम 'इत्फ़ीर' था उसकी मृत्यु हो गई थी तो उसके पश्चात ज़ुलेख़ा का विवाह आदरणीय यूसुफ़ से हो गया तथा दो पुत्र भी हुए, एक का नाम अफ़राईम तथा दूसरे का नाम मीशा था, अफ़राईम ही यूशअ बिन नून तथा आदरणीय अय्यूब की पत्नी 'रहमत' के पिता थे (तफ़सीर इब्ने कसीर) परन्तु यह बात किसी प्रमाणित कथन से सिद्ध नहीं होती, इसलिये विवाह वाली बात उचित प्रतीत नहीं होती है। इसके अतिरिक्त उस स्त्री से जिसका आचरण का प्रदर्शन हुआ, उसके होते हुए एक नबी के परिवार से सम्बन्ध, अत्यधिक अनुचित बात लगती है।

[1]यह उस समय की घटना है जब समृद्धि के सात वर्ष समाप्त होकर अकाल प्रारम्भ हो गया, जिसने मिस्र देश के अधिकांश क्षेत्र को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी इसका प्रभाव पहुँचा, जहाँ आदरणीय याक़ूब तथा आदरणीय यूसुफ़ के भाई निवास करते थे। आदरणीय यूसुफ़ ने इससे निपटने के लिये जो सुव्यवस्था की थी, वे सार्थक हुई तथा प्रत्येक ओर से लोग आदरणीय यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे। आदरणीय यूसुफ़ की प्रसिद्धि कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस प्रकार अनाज बिक्री कर रहा है। अतः पिता के आदेश पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूँजी लेकर अनाज प्राप्ति के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ आदरणीय यूसुफ़ विराजमान थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, परन्तु यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया।

خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٥٩

तथा मैं हूँ भी उत्तम प्रकार से अतिथि सत्कार करने वालों में ।[1]

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ ۝٦٠

(६०) परन्तु यदि तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी ओर से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे निकट भी न आ सकोगे ।[2]

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا لَفٰعِلُوْنَ ۝٦١

(६१) उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस विषय में फुसलाकर पूरा प्रयास करेंगे ।[3]

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَا اِذَا

(६२) तथा अपने सेवकों से कहा कि [4] उनका धन उन्हीं की बोरियों में रख दो[5] कि जब लौट

---

[1]आदरणीय यूसुफ़ ने अनजान बनकर जब अपने भाईयों से बातें पूछीं, तो उन्होंने जहाँ अन्य सब कुछ बताया यह भी बता दिया कि हम दस भाई यहाँ उपस्थित हैं । परन्तु हमारे दो सौतेले भाई (अर्थात दूसरी माता से) अन्य भी हैं, उनमें से एक जंगल में मर गया तथा उसके दूसरे भाई को पिता ने अपनी सान्तवना के लिये अपने पास रखा है, उसे हमारे साथ नहीं भेजा । जिस पर आदरणीय यूसुफ़ ने कहा कि भविष्य में उसे भी साथ लेकर आना । देखते नहीं कि मैं नाप भी पूरा देता हूँ तथा अतिथि सत्कार तथा सेवा भी भली प्रकार करता हूँ ।

[2]प्रलोभन के साथ यह चेतावनी भी है कि यदि ग्यारहवें भाई को साथ न लाये, तो न तुम्हें अनाज मिलेगा न मेरी ओर से यह सेवा-सत्कार का प्रबन्ध होगा ।

[3]अर्थात हम अपने पिता से उस भाई को लाने की माँग करेंगे तथा हमें विश्वास है कि हम उसमें सफल होंगे ।

[4] فتيان (फ़ित्यान) का अर्थ है नवयुवक जिससे तात्पर्य है नौकर, सेवक तथा दास, जो राजदरबार में नियुक्त थे ।

[5]इससे तात्पर्य वह पूँजी है जो यूसुफ़ के भाई अनाज ख़रीदने के लिये अपने साथ लाये थे । رحال (रेहाल) से तात्पर्य उनका सामान जो यात्रा के लिये बाँधे गये थे । पूँजी गुप्तरूप से उनके यात्रा के सामान में रख दो कि सम्भव है पुन: आने के लिये और पूँजी न हो, तो यही पूँजी लेकर आ जायें । कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि भाईयों से अनाज का मूल्य लेना उन्होंने पसन्द नहीं किया, इसलिये पूँजी वापस रखवा दी ।

انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٢﴾

कर अपने परिवार में जायेंगे तथा धन को पहचान लें, तो अति संभव है कि यह फिर आयें।

فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ﴿٦٣﴾

(६३) जब ये लोग लौटकर अपने पिता के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया ।[1] अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी रक्षा के उत्तरदायी हैं।

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿٦٤﴾

(६४) (याक़ूब ने) कहा कि क्या मैं इसके विषय में तुम्हारा वैसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस से पूर्व उसके भाई के विषय में विश्वास किया ?[2] बस अल्लाह तआला ही अति उत्तम रक्षक है तथा वह सभी दयावानों से अत्यधिक दयावान है ।[3]

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِيْ ؕ هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا

(६५) तथा जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना धन विद्यमान पाया जो उनकी ओर लौटा दिया गया था। कहने लगे हमारे पिताजी ! हमें अन्य क्या चाहिये ?[4] यह हमारा धन

---

[1]अर्थ यह है कि भविष्य में अनाज बिनयामीन के भेजने के साथ प्रतिबन्धित है। यदि यह साथ न जायेगा तो अनाज नहीं मिलेगा। इसलिये इसे अवश्य साथ भेजें ताकि हमें पुन: इसी प्रकार अनाज मिल सके, जिस प्रकार से इस बार मिला है। तथा इस प्रकार का भय न करें जिस प्रकार यूसुफ़ को भेजते हुए किया था। हम उसकी रक्षा करेंगे।

[2]अर्थात तुमने यूसुफ़ को भी साथ ले जाते समय इसी प्रकार संरक्षण का वचन दिया था, परन्तु जो कुछ हुआ, वह सामने है। अब तुम्हारा किस प्रकार विश्वास करूँ ?

[3]फिर भी चूँकि अनाज की अत्यधिक आवश्यकता थी, इसलिये भय के उपरान्त भी बिनयामीन को साथ भेजने से इंकार उचित नहीं समझा तथा अल्लाह पर भरोसा करके उसे भेजने के लिये तैयार हो गये।

[4]अर्थात राजा के इस प्रकार के सदव्यवहार के उपरान्त कि उसने हमारी सेवा तथा सत्कार भी भली प्रकार किया तथा हमारी पूँजी भी वापस कर दी अन्य हमें क्या चाहिए ?

رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيرٍ ۖ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾

हमें लौटा दिया गया है, तथा हम अपने परिवार के लिये अन्न ला देंगे तथा अपने भाई की सुरक्षा रखेंगे तथा एक ऊँट का नाप अधिक लायेंगे ।[1] यह नाप तो अधिक सरल है ।[2]

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

(६६) (याक़ूब ने) कहा कि मैं तो उसे कदापि तुम्हारे साथ न भेजूँगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझे वचन न दो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे अतिरिक्त इसके कि तुम सब बन्दी बना लिये जाओ ।[3] जब उन्होंने पक्का वचन दिया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक है ।

وَقَالَ يَا بَنِيَّ لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ

(६७) तथा (याक़ूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो! तुम सब एक द्वार से न जाना बल्कि कई द्वारों से अलग-अलग रूप से प्रवेश करना ।[4]

---

[1]क्योंकि प्रति व्यक्ति ऊँट जितना बोझ उठा सकता था अनाज दिया जाता था, बिनयामीन के कारण एक ऊँट की भरती अधिक मिलती ।

[2]इसका एक अभिप्राय तो यह है कि राजा के लिये एक ऊँट का भार कोई कठिन कार्य नहीं है, सरल है । दूसरा भावार्थ यह है कि ذلك का संकेत उस अनाज की ओर है, जो साथ लाये थे तथा يَسِيرٌ का अर्थ थोड़ी मात्रा है अर्थात हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी मात्रा में है, बिनयामीन के जाने से हमें अधिक अनाज मिल जायेगा, तो अच्छी ही बात है, हमारी आवश्यकता अधिक सुचारू रूप से पूर्ण हो जायेगी ।

[3]अर्थात तुम्हें सामूहिक कठिनाई आ पड़े अथवा तुम सब मर जाओ अथवा बन्दी बना लिये जाओ, जिससे छुटने में पर तुम असमर्थ हो, तो अन्य बात है, उस स्थिति में तुम क्षम्य होगे ।

[4]जब बिनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे, तो यह निर्देश दिया, क्योंकि एक ही पिता के ग्यारह पुत्र जो शरीरिक ऊँचाई एवं आकार में भी श्रेष्ठ हों, जब एक साथ एक ही स्थान अथवा एक साथ कहीं से गुज़रें तो सामान्यत: उन्हें लोग आश्चर्य तथा ईर्ष्या से देखते हैं तथा यही बात नज़र लगने का कारण बनती है । अत: उन्हें बुरी दृष्टि से बचने

مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ اُغۡنِىۡ عَنۡكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ ؕ اِنِ الۡحُكۡمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ ۚ وَعَلَيۡهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُتَوَكِّلُوۡنَ ۝

में अल्लाह की ओर से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता। आदेश केवल अल्लाह ही का चलता है।[1] मेरा पूर्ण विश्वास उसी पर है तथा प्रत्येक भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

وَلَمَّا دَخَلُوۡا مِنۡ حَيۡثُ اَمَرَهُمۡ اَبُوۡهُمۡ ؕ مَا كَانَ يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ مِّنَ اللّٰهِ مِنۡ شَىۡءٍ اِلَّا حَاجَةً فِىۡ نَفۡسِ يَعۡقُوۡبَ قَضٰٮهَا ؕ وَاِنَّهٗ

(६८) तथा जब वे उन्हीं मार्गों से जिनका आदेश उनके पिता ने दिया था गये। कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात निर्धारित कर दी है वह उन्हें उससे तनिक भी बचा ले। हाँ याक़ूब ने अपने अन्त:करण के भय को पूरा किया।[2]

के लिये उपाय के रूप में यह निर्देश दिये। नज़र लग जाना सत्य है, जैसाकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी सहीह हदीस में सिद्ध है। जैसे العين حق "नज़र लग जाना सत्य है" (सहीह बुख़ारी किताबुल तिब्ब, बाबुल ऐन हक़्कुन तथा सहीह मुस्लिम किताबुस्सलाम बाबुल तिब्बे वलमरजे वलरुकी) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बुरी दृष्टि से बचने के लिये यह विनती के वाक्य अपने समुदाय को बताये हैं। जैसे कहा कि जब तुम्हें कोई वस्तु अच्छी लगे तो بارك الله कहो (मुअत्ता इमाम मालिक बाबुलवदुअे मिनल ऐन ताअलीक़ाते मिशकात अलबानी संख्या १२८६) जिसकी नज़र लगे उसको कहा जाये कि स्नान करे तथा उसके स्नान का यह पानी उस व्यक्ति के सिर तथा शरीर पर डाला जाये जिसको नज़र लगी हो (वर्णित संकेत) इसी प्रकार ﴿مَا شَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ﴾ पढ़ना क़ुरआन से सिद्ध है। (सूर: *कहफ़*-३९) ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ﴾ तथा ﴿قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ नज़र के लिये पढ़कर फूँकना चाहिये (जामेअ तिर्मिज़ी अबवाबुल त्तिब्बे, बाब माज़ाअ फ़िररुक्य: बिल मुअव्वज़तैन)

[1]अर्थात यह निर्देश प्रत्यक्ष साधनों तथा बचाव एवं उपाय के रूप में है जिसके प्रयोग का मानव को आदेश दिया गया है परन्तु इससे अल्लाह तआला के लिखे भाग्य में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। उसी के भाग्य लेखानुसार वह घटित होगा।

[2]अर्थात इस उपाय से अल्लाह के भाग्यलेखा को टाला नहीं जा सकता था। परन्तु आदरणीय याक़ूब ने जो (नज़र लग जाने का) भय था, उसके कारण उन्होंने ऐसा कहा।

لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَٰهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

नि:संदेह वह हमारे सिखाये उस ज्ञान का ज्ञानी था, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।[1]

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ ءَاوَىٰٓ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّىٓ أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

(६९) तथा ये सब जब यूसुफ़ के पास पहुँच गये, तो उसने अपने भाई को अपने निकट बिठा लिया तथा कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ चिन्ता न कर ।[2]

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِى رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسَٰرِقُونَ ﴿٧٠﴾

(७०) फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला[3] रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे यात्री दल ![4] तुम लोग तो चोर हो ।[5]

---

[1]अर्थात यह उपाय अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) के प्रकाश में थी तथा यह विश्वास भी कि حذر (बचाव व्यवस्था) भाग्य को नहीं बदल सकती, अल्लाह तआला के सिखलाये हुए ज्ञान पर आधारित थी, जिससे अधिकतर लोग अनजान हैं।

[2]कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि दो-दो व्यक्तियों को एक-एक कमरे में ठहराया गया। इस प्रकार बिनयामीन अकेले रह गये, तो यूसुफ़ ने उन्हें अकेले एक कमरे में रखा तथा फिर एकान्त में उनसे बातें कीं तथा उन्हें पूर्व की बातें याद दिलाकर कहा कि उन भाईयों ने मेरे साथ जो कुछ किया, उस पर दुख न कर। कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि बिनयामीन को रोकने के लिये जो बहाना प्रयोग करना था, उससे भी उन्हें परिचित करा दिया था ताकि वह दुखी न हों।

[3]कहा जाता है कि यह سقاية (पानी पीने का बर्तन) स्वर्ण अथवा चाँदी का था, पानी पीने के अतिरिक्त अनाज नापने का भी कार्य उससे लिया जाता था। उसे गुप्त रूप से बिनयामीन के सामान में रख दिया गया।

[4] العِير वास्तव में उन ऊँटों, गधों अथवा खच्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है। यहाँ तात्पर्य أصحاب العِير अर्थात यात्रा वाले यात्री हैं।

[5]चोरी का यह सम्बन्ध अपने स्थान पर उचित था क्योंकि पुकारने वाला सेवक आदरणीय यूसुफ़ की सोची-समझी योजना से अवगत नहीं था, इसका अर्थ यह है कि तुम्हारा हाल तो चोरों जैसा है कि राजा का प्याला, राजा की इच्छा के बिना तुम्हारे सामान के अन्दर है।

قَالُوْا وَأَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ﴿٧١﴾

(७१) उन्होंने उनकी ओर मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या वस्तु खो गयी है ?

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ﴿٧٢﴾

(७२) उत्तर दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अन्न मिलेगा। उस वचन का मैं प्रतिभूत (ज़मानतदार) हूँ।[1]

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾

(७३) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! तुम्हें भली-भाँति ज्ञात है कि हम देश में आशान्ति उत्पन्न करने के लिये नहीं आये तथा न हम चोर हैं।[2]

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ﴿٧٤﴾

(७४) उन्होंने कहा अच्छा चोरी का क्या दण्ड है यदि तुम झूठे हो।[3]

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ

(७५) उत्तर दिया कि इसका दण्ड यही है कि जिसके सामान में से पाया जाये वही उसका

---

[1]अर्थात मैं इस बात की ज़मानत देता हूँ कि खोज से पूर्व जो व्यक्ति यह पीने का शाही कटोरा हमको समर्पित कर देगा, तो उसे उपहार अथवा मज़दूरी के रूप में इतना अनाज दिया जायेगा जो एक ऊँट उठा सके।

[2]यूसुफ़ के भाई इस योजना से अनभिज्ञ थे जो आदरणीय यूसुफ़ ने बना रखी थी। इसलिये सौगन्ध खाकर उन्होंने अपने चोर होने का तथा धरती पर आतंक उत्पन्न करने से इंकार किया।

[3]अर्थात यदि तुम्हारे सामान से वह शाही कटोरा मिल गया तो फिर उसका क्या दण्ड होगा ?

نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٥﴾

बदला है ।[1] हम तो अत्याचारियों को यही दण्ड दिया करते हैं ।[2]

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاۤءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَاۤءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَاۤءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۤءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٦﴾

(७६) फिर (यूसुफ़ ने) सामान में खोज प्रारम्भ कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पूर्व । फिर उसने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला ।[3] हमने यूसुफ़ के लिये इसी प्रकार यह साधन बनाया ।[4] उस राजा के प्रावधान के अनुसार यह अपने भाई को न ले सकता था,[5] परन्तु यह कि अल्लाह को अंगीकार हो । हम जिसका

---

[1]अर्थात चोर को कुछ समय के लिये उस व्यक्ति के हवाले कर दिया जाता था, जिसकी उसने चोरी की होती थी । यह आदरणीय याक़ूब के धर्म विधान में दण्ड था, जिसके अनुसार यूसुफ़ के भाईयों ने यह दण्ड निर्धारित किया ।

[2]यह कथन भी यूसुफ़ के भाईयों का है । कुछ व्याख्याकारों के निकट यह कथन यूसुफ़ के निकटवर्ती अधिकारियों का है कि उन्होंने कहा कि हम अत्याचारियों (अपराधियों) को इसी प्रकार ही दण्ड देते हैं परन्तु आयत का अगला भाग कि "राजा के धर्म में वह अपने भाई को बन्दी न बना सकते थे" इस कथन का खण्डन करता है ।

[3]पहले भाईयों के सामान को देखा, अन्त में बिनयामीन का सामान देखा ताकि उन्हें यह सन्देह न हो कि यह सोची समझी योजना है ।

[4]अर्थात हमने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा यूसुफ़ को यह उपाय समझाया । इससे ज्ञात होता है कि किसी उचित उद्देश्य के लिये ऐसा मार्ग अपनाना जिसकी प्रदर्शित अवस्था बहाने तथा योजना की हो, उचित है, यदि वह विधि किसी धार्मिक नियम के विरूद्ध न हो (फ़तहुल क़दीर)

[5]अर्थात राजा का मिस्र में जो कानून तथा नियम प्रचलित था, उसके अनुसार बिनयामीन को रोकना सम्भव नहीं था । इसलिये उन्होंने यात्रियों ही से पूछा कि बताओ ! इस अपराध का क्या दण्ड हो ?

चाहें पद उच्च कर दें ।[1] प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर एक प्रज्ञ विद्यमान है ।[2]

قَالُوٓا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَّهُۥ مِن قَبْلُ ۚ فَأَسَرَّهَا يُوسُفُ فِى نَفْسِهِۦ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ أَنتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۖ وَٱللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾

(७७) उन्होंने कहा कि यदि उसने चोरी की, तो (आश्चर्य की बात नहीं) इसका भाई भी पहले चोरी कर चुका है ।[3] यूसुफ़ ने यह बात अपने दिल में रख ली, तथा उनके समक्ष बिल्कुल व्यक्त नहीं किया । कहा कि तुम बुरे स्थान में हो,[4] तथा जो तुम वर्णन कर रहे हो उसे अल्लाह भली-भाँति जानता है ।

قَالُوا يَٰٓأَيُّهَا ٱلْعَزِيزُ إِنَّ لَهُۥٓ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا فَخُذْ أَحَدَنَا

(७८) उन्होंने कहा कि हे मिस्री अज़ीज़ ।[5] इसके पिता वयोवृद्ध व्यक्ति हैं । आप इस के

---

[1]जिस प्रकार यूसुफ़ का पद हमने उच्च किया ।

[2]अर्थात प्रत्येक ज्ञानी से बढ़कर कोई न कोई ज्ञानी होता है, इसलिये कोई ज्ञानी इस गर्व में न रहे कि मैं ही अपने समय का श्रेष्ठ ज्ञानी हूँ । तथा कुछ व्याख्याकार कहते हैं कि इसका अर्थ है कि प्रत्येक ज्ञानी के ऊपर सर्वज्ञाता अल्लाह तआला है ।

[3]यह उन्होंने अपनी पवित्रता तथा सज्जनता को प्रदर्शित करने के लिये कहा, क्योंकि यूसुफ़ तथा बिनयामीन उनके सगे भाई नहीं थे, सौतेले थे । कुछ व्याख्याकारों ने यूसुफ़ की चोरी के लिये दो गुप्त बातें उदघृत की हैं, जो कोई प्रमाणित कथन पर आधारित नहीं है । उचित बात यही ज्ञात होती है कि उन्होंने अपने को तो अत्यधिक प्रतिष्ठित तथा सुचरित्र सिद्ध किया तथा यूसुफ़ तथा बिनयामीन को तुच्छ चरित्र का तथा मिथ्या बोलते हुए उन्हें चोर तथा बेईमान सिद्ध करने का प्रयत्न किया ।

[4]आदरणीय यूसुफ़ के इस कथन से भी ज्ञात होता है कि उन्होंने यूसुफ़ से चोरी को सम्बन्धित करके स्पष्टरूप से असत्य कथन का कार्य किया ।

[5]आदरणीय यूसुफ़ को मिस्री अज़ीज़ इसलिये कहा गया कि उस समय सारे वास्तविक अधिकार आदरणीय यूसुफ़ के पास थे, राजा नाम मात्र के लिये ही राजाधिराज था ।

مَكَانَهُۥٓ ۖ إِنَّا نَرَىٰكَ مِنَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾

बदले हम में से किसी को ले लीजिये। हम देखते हैं कि आप बड़े उपकारी व्यक्ति हैं।[1]

قَالَ مَعَاذَ ٱللَّهِ أَن نَّأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَٰعَنَا عِندَهُۥٓ إِنَّآ إِذًا لَّظَٰلِمُونَ ﴿٧٩﴾

(७९) (यूसुफ़ ने) कहा कि हमने जिसके पास अपनी वस्तु पाई है उसके अतिरिक्त अन्य को बन्दी बनाने से अल्लाह की शरण चाहते हैं। ऐसा करने से हम नि:संदेह अन्याय करने वाले हो जायेंगे।[2]

فَلَمَّا ٱسْتَيْـَٔسُوا۟ مِنْهُ خَلَصُوا۟ نَجِيًّا ۖ قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوٓا۟ أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُم مَّوْثِقًا مِّنَ ٱللَّهِ وَمِن قَبْلُ مَا فَرَّطتُمْ فِى يُوسُفَ ۖ فَلَنْ أَبْرَحَ ٱلْأَرْضَ حَتَّىٰ يَأْذَنَ لِىٓ أَبِىٓ أَوْ يَحْكُمَ ٱللَّهُ لِى ۖ وَهُوَ خَيْرُ ٱلْحَٰكِمِينَ ﴿٨٠﴾

(८०) जब यह उससे निराश होगये तो एकान्त में बैठकर विचार-विमर्श करने लगे।[3] उनमें जो सबसे बड़ा था उसने कहा कि तुम्हें ज्ञात नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह को मध्य रखकर दृढ़ प्रतिज्ञा तथा वचन लिया है तथा इससे पूर्व तुम यूसुफ़ के विषय में अपराध कर चुके हो। अब तो मैं इस धरती से न हटूँगा जब तक पिता स्वयं

---

[1]पिता तो अवश्य वृद्ध थे, परन्तु यहां उनका मुख्य उद्देश्य बिनयामीन को छुड़ाना था। उनके विचार में वही यूसुफ़ वाली बात रही कि हमें पुन: बिनयामीन के बिना पिता के पास न जाना पड़े तथा पिता हमसे कहें कि तुमने मेरे बिनयामीन को भी यूसुफ़ की भाँति खो दिया। इसलिये यूसुफ़ के उपकारों को वर्णन करके यह बात की कि वह शायद यह उपकार भी कर दें कि बिनयामीन को छोड़ दें तथा उसके स्थान पर किसी अन्य भाई को रख लें।

[2]यह उत्तर इसलिये दिया कि आदरणीय यूसुफ़ का मूल उद्देश्य तो बिनयामीन को ही रोकना था।

[3]क्योंकि बिनयामीन को छोड़कर जाना उनके लिए अत्यन्त कठिन था, वे पिता को मुख दिखाने योग्य न रहे थे। इसलिये आपस में विचार-विमर्श करने लगे कि अब क्या किया जाये ?

मुझे आज्ञा न दें ।[1] अथवा अल्लाह तआला मेरी इस समस्या का निर्णय कर दे, वह सर्वश्रेष्ठ निर्णायक है ।[2]

ارْجِعُوٓا إِلَىٰٓ أَبِيكُمْ فَقُولُوا يَٰٓأَبَانَآ إِنَّ ٱبْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَآ إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَٰفِظِينَ ﴿٨١﴾

(८१) तुम सब पिताजी की सेवा में वापस जाओ तथा कहो कि हे पिताजी ! आपके पुत्र ने चोरी की तथा हमने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे ।[3] हम कुछ अप्रत्यक्ष की सुरक्षा करने वाले तो न थे ।[4]

وَسْـَٔلِ ٱلْقَرْيَةَ ٱلَّتِى كُنَّا فِيهَا وَٱلْعِيرَ ٱلَّتِىٓ أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ

(८२) तथा आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे तथा उन यात्रियों से भी पूछ लें

---

[1]उस बड़े भाई ने इस परिस्थिति में पिता का सामना करने की अपने में शक्ति तथा क्षमता नही पायी तो स्पष्ट कह दिया कि मैं तो यहाँ से उस समय तक नहीं जाऊँगा जब तक स्वयं पिताजी खोज करके मेरे निर्दोष होने का विश्वास न कर लें तथा मुझे आने की आज्ञा न दें ।

[2]अल्लाह मेरी समस्या हल कर दे का अर्थ है कि किसी प्रकार (मिस्री अज़ीज़) बिनयामीन को छोड़ दे तथा मेरे साथ जाने की आज्ञा दे दे अथवा यह अर्थ है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी शक्ति दे कि मैं बिनयामीन को तलवार अथवा शक्ति से मुक्त कराकर अपने साथ ले जाऊँ ।

[3]अर्थात हमने जो वचन दिया था कि बिनयामीन को सकुशल वापस लौटाकर ले आयेंगे, तो यह हमने अपने ज्ञान के आधार पर किया था, तदुपरान्त जो घटना घटित हुई तथा जिसके कारण बिनयामीन को हमें छोड़ना पड़ा, यह हमारे बुद्धि तथा विचार में भी न था। दूसरा अर्थ यह है कि हमने चोरी का जो दण्ड वर्णित किया था कि चोर को ही चोरी के बदले में रख लिया जाये, तो यह दण्ड हमने अपने ही ज्ञान के आधार पर निर्धारित की थी, इसमें किसी प्रकार के कुविचार नहीं मिश्रित थे, परन्तु यह घटना थी कि जब सामान में ढूँढ़ा गया तो चुराया गया कटोरा बिनयामीन के सामान में से निकल आया।

[4]अर्थात भविष्य में घटित होने वाली घटना से हम अनजान थे ।

وَإِنَّا لَصَٰدِقُونَ

जिनके साथ हम आये हैं तथा नि:संदेह हम पूर्णरूप से सच्चे हैं ।[1]

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ عَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ

(८३) (याक़ूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुमने अपनी ओर से बात बना ली,[2] अत: धैर्य ही उत्तम है । हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सबको मेरे पास ही पहुँचा दे ।[3] वह ही ज्ञान तथा विज्ञानी है ।

وَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسَفَىٰ عَلَىٰ يُوسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنَاهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ

(८४) तथा फिर उन से मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ़ ![4] उनकी आँखें दुख-शोक के कारण से सफेद हो गयी थीं ।[5] तथा वह दुख शोक को सहन किये हुए थे ।

---

[1]नगर से तात्पर्य मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, अभिप्राय मिस्रवासी हैं । इसी प्रकार والعير से तात्पर्य أصحاب العير अर्थात यात्रा के साथी हैं । आप मिस्र जाकर मिस्रवासियों से तथा उन यात्रियों से जिनके साथ यात्रा करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम वर्णन कर रहे हैं, वह सत्य है, इसमें असत्य का कोई मिश्रण नहीं है ।

[2]आदरणीय याक़ूब वास्तविक दशा से पूर्णत: अनभिज्ञ थे तथा अल्लाह ने भी वह्यी (प्रकाशना) द्वारा वास्तविक स्थिति नहीं बतायी । इसलिये वह यही समझे कि मेरे इन पुत्रों ने जिस प्रकार इससे पूर्व यूसुफ़ के विषय में बात गढ़कर वर्णन की थी, अब पुन: उसी प्रकार उन्होंने अपनी ओर से बात बना ली है । बिनयामीन के साथ उन्होंने क्या किया उसका निश्चित ज्ञान आदरणीय याक़ूब के पास नहीं था, परन्तु यूसुफ़ की घटना के आधार पर अनुमान करते हुए उनकी ओर से आदरणीय याक़ूब के हृदय में शंका एवं संदेह उचित था ।

[3]अब पुन: धैर्य के अतिरिक्त कोई मार्ग न था । फिर भी धैर्य के साथ आशा का दामन भी नहीं छोड़ा । جميعا से तात्पर्य यूसुफ़ बिनयामीन तथा बड़ा पुत्र है जो लज्जा के कारण वहीं मिस्र में रूक गया था कि या तो पिताजी मुझे इसी दशा में आने की आज्ञा दें अथवा मैं किसी प्रकार बिनयामीन को अपने साथ लेकर आऊँगा ।

[4]अर्थात इस नये दुख ने यूसुफ़ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया ।

[5]अर्थात आँखों की कालिमा दुख के कारण सफेदी में परिवर्तित हो गयी थी ।

قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿٨٥﴾

(८५) (पुत्रों ने) कहा अल्लाह की सौगन्ध ! आप सदैव यूसुफ़ के स्मरण में ही लीन रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे अथवा मर जायेंगे ।[1]

قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾

(८६) उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी विपता तथा दुख की गुहार अल्लाह से कर रहा हूँ । मुझे अल्लाह की ओर से उन बातों का ज्ञान प्राप्त है, जिनसे तुम अनजान हो ।[2]

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٧﴾

(८७) मेरे प्यारे पुत्रो ! तुम जाओ तथा यूसुफ़ और उसके भाई की भली प्रकार खोज करो ।[3] तथा अल्लाह की कृपा से निराश न हो । निःसंदेह अल्लाह की कृपा से वही निराश होते हैं जो काफ़िर होते हैं ।[4]

---

[1] حَرَض उस शारीरिक विकार अथवा मानसिक निर्बलता को कहते हैं, जो बुढ़ापे प्रेम अथवा निरन्तर दुख के कारण मनुष्य को हो जाती है, यूसुफ़ के वर्णन से भाईयों की द्वेष अग्नि भड़क उठी, तथा अपने पिता को यह कहा ।

[2] इससे तात्पर्य तो वह स्वप्न है जिसके विषय में उन्हें पूर्ण विश्वास था कि अवश्य साकार होगा तथा वे यूसुफ़ के समक्ष दण्डवत होंगे अथवा उनका यह विश्वास था कि यूसुफ़ जीवित हैं तथा उनसे जीवन में अवश्य मिलन होगा ।

[3] अत: उसी विश्वास से प्रेरित होकर उन्होंने अपने पुत्रों को यह आदेश दिया ।

[4] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने वर्णन किया ।

﴿ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ﴾

"भटके हुए लोग ही अल्लाह की दया से निराश होते हैं ।" (सूर: *अल-हिज्र* ,५६)

इसका अर्थ यह है कि ईमानवालों को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य तथा संयम का तथा अल्लाह की असीम कृपा की आशाओं का दामन नहीं छोड़ना चाहिये ।

(८८) फिर ये लोग जब यूसुफ़[1] के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अज़ीज़ ! हम तथा हमारा परिवार अत्यधिक कठिनाई में है। हम थोड़े से तुच्छ धन लाये हैं।[2] परन्तु आप हमें पूरे अन्न का नाप दे दीजिये,[3] तथा हम पर दान कीजिये [4] अल्लाह तआला दान करने वालों को बदला देता है।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَٰٓأَيُّهَا ٱلْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا ٱلضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَٰعَةٍ مُّزْجَىٰةٍ فَأَوْفِ لَنَا ٱلْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَآ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ يَجْزِى ٱلْمُتَصَدِّقِينَ ﴿٨٨﴾

(८९) (यूसुफ़ ने) कहा जानते भी हो कि तुमने यूसुफ़ तथा उसके भाई के साथ अपनी अज्ञानतावश क्या-क्या किया ?[5]

قَالَ هَلْ عَلِمْتُم مَّا فَعَلْتُم بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنتُمْ جَٰهِلُونَ ﴿٨٩﴾

(९०) उन्होंने कहा क्या (वास्तव में) तू ही यूसुफ़ है।[6] उत्तर दिया हाँ, मैं ही यूसुफ़ हूँ।

قَالُوٓا۟ أَءِنَّكَ لَأَنتَ يُوسُفُ ۖ قَالَ أَنَا۠

---

[1]यह तीसरी बार उनका मिस्र आना था।

[2]अर्थात अनाज लेने के लिये हम जो मूल्य लेकर आये हैं वह अत्यन्त तुच्छ है तथा थोड़ा है।

[3]अर्थात हमारी छोटी पूँजी को न देखें, हमें उसके बदले में पूरा नाप दें।

[4]अर्थात हमारी कम पूँजी स्वीकार करके हम पर उपकार तथा दान करें। तथा कुछ व्याख्याकारों ने इसका अर्थ लिखा है कि हमारे भाई बिनयामीन को स्वतंत्र करके हम पर उपकार करें।

[5]जब उन्होंने अत्यन्त नम्रतापूर्वक भाव से दान-पुण्य अथवा भाई के स्वतन्त्रता की अपील की तो साथ ही पिता की वृद्धावस्था, स्वास्थ की क्षीणता तथा पुत्र की जुदाई का भी वर्णन किया, जिससे यूसुफ़ का दिल भर आया, आँखें छलक उठीं, तथा वास्ताविकता प्रदर्शित करने के लिये बाध्य हो गये। फिर भी भाईयों की क्रूरता के वर्णन के साथ ही नम्र चरित्र का भी प्रदर्शन किया कि यह कार्य तुमने ऐसी अवस्था में किया जब तुम अशिक्षित तथा बुद्धिहीन थे।

[6]भाईयों ने जब मिस्री अधिकारी के मुख से उस यूसुफ़ का वर्णन सुना, जिसे उन्होंने बाल्यकाल मे कनआन के एक अंधेरे कुएं में फेंक दिया था, तो वे आश्चर्य में पड़ गये तथा ध्यानपूर्वक देखने के लिये बाध्य भी हो गये कि कहीं हम से सम्बोधक राजा, यूसुफ़

يُوسُفُ وَهٰذَآ أَخِي ۖ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ۖ إِنَّهُۥ مَن يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾

तथा यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर कृपा तथा दया की। बात यह है कि जो भी परहेज़गारी तथा धैर्य से रहे, तो अल्लाह (तआला) किसी पुण्य करने वाले का बदला नष्ट नहीं करता है।[1]

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِن كُنَّا لَخَاطِئِينَ ﴿٩١﴾

(९१) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध कि अल्लाह ने तुझे हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है तथा यह भी सत्य है कि हम अपराधी हैं।[2]

قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ۖ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۖ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) उत्तर दिया, आज तुम पर कोई आरोप नहीं है।[3] अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सभी दयावानों में दयानिधि है।

اذْهَبُوا بِقَمِيصِي هٰذَا فَأَلْقُوهُ عَلَىٰ وَجْهِ أَبِي يَأْتِ بَصِيرًا

(९३) मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ तथा मेरे पिता के मुख पर डाल दो कि वह देखने लगें[4]

तो नहीं ? वरन् यूसुफ़ की घटना का ज्ञान उन्हें किस प्रकार हो सकता है ? अत: उन्होंने प्रश्न किया कि क्या तू यूसुफ़ ही तो नहीं ?

[1]प्रश्नोत्तर में स्वीकार के साथ अल्लाह के उपकार का वर्णन तथा धैर्य एवं संयम के अच्छे परिणाम का भी वर्णन करके बता दिया कि तुमने मुझे मार डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु यह अल्लाह तआला की दया तथा उपकार है कि उसने न केवल कुऐं से निकाला, अपितु मिस्र का राज्य भी प्रदान किया तथा यह फल है उस धैर्य तथा अल्लाह से भय करने का जिसकी सन्मति अल्लाह ने मुझे प्रदान की।

[2]भाईयों ने जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो अपनी त्रुटियों तथा दोषों को स्वीकार कर लिया।

[3]आदरणीय यूसुफ़ ने भी ईशदूतत्व की गरिमा दिखाते हुए क्षमा करके कहा कि जो हुआ सो हो गया। आज तुम्हारी कोई भर्त्सना अथवा निन्दा नहीं की जायेगी। मक्का विजय के दिन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उन काफ़िरों तथा कुरैश के प्रमुखों को, जो आप के खून के प्यासे थे तथा आप को नाना प्रकार के कष्ट दिये थे, इन्ही शब्दों को कहकर उन्हें क्षमा कर दिया था। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

[4]कमीज़ के मुख पर पड़ने से आँखों की ज्योंति का आ जाना, एक विचित्रता तथा चमत्कार के रूप में था।

وَأْتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾

तथा आ जायें एवं अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ।[1]

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَن تُفَنِّدُونِ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा जब ये यात्री दल विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे निर्बोध न समझो।[2]

قَالُوا تَاللَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ﴿٩٥﴾

(९५) वे कहने लगे कि अल्लाह की सौगन्ध, आप तो अपनी उसी पुरानी त्रुटि[3] पर स्थिर हैं।

فَلَمَّا أَن جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ

(९६) जब शुभसूचना देने वाले ने पहुँचकर उनके मुख पर कुर्ता डाला उसी क्षण वह पुन: देखने लगे।[4] कहा कि क्या मैं तुमसे न

---

[1]यह यूसुफ़ ने अपने पूरे परिवार को मिस्र आने का आमंत्रण दिया।

[2]उधर वह कमीज़ लेकर यात्री मिस्र से चले तथा इधर आदरणीय याक़ूब को अल्लाह तआला की ओर से अद्भुत प्रकार से आदरणीय यूसुफ़ की सुगन्ध आने लग गयी। यह जैसे इस बात की घोषणा थी कि अल्लाह के पैग़म्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की ओर से व्यवस्था तथा सूचना न पहुँचे, तो पैग़म्बर अनजान होता है, चाहे पुत्र अपने नगर के किसी कुऐं में ही क्यों न हो ? तथा जब अल्लाह प्रबन्ध कर दे, तो मिस्र जैसे दूरस्थ क्षेत्र से भी पुत्र की सुगन्ध आ जाती है।

[3] ضلال से तात्पर्य प्रेम तथा प्यार की मुग्धता है, जो आदरणीय याक़ूब को अपने पुत्र युसुफ के साथ थी। पुत्र कहने लगे, अभी तक आप उसी पुरानी (त्रुटि) पर अर्थात यूसुफ़ के प्रेम में लीन हैं इतना दीर्घकाल समाप्त होने के पश्चात भी आपके हृदय से यूसुफ़ का प्रेम न निकला।

[4]अर्थात जब वह शुभसूचना देने वाला आ गया तथा आकर वह कमीज़ आदरणीय याक़ूब के मुख पर डाल दी, तो उसे चमत्कारिक रूप से उनकी नयन ज्योति फिर से वापस आ गयी।

أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

कहा करता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ, जो तुम नहीं जानते ।[1]

قَالُوا يَا أَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ﴿٩٧﴾

(९७) उन्होंने कहा हे पिता ! आप हमारे पापों की क्षमा याचना कीजिये, निःसंदेह हम अपराधी हैं ।

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٩٨﴾

(९८) कहा, अच्छा मैं शीघ्र ही तुम्हारे लिये अपने प्रभु से क्षमा की प्रार्थना करूँगा ।[2] वह अत्यधिक क्षमा करने वाला तथा अत्यन्त कृपालु है ।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوسُفَ آوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ﴿٩٩﴾

(९९) जब ये पूर्ण परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माता-पिता को अपने निकट स्थान दिया ।[3] तथा कहा कि अल्लाह को स्वीकार है तो आप सब सुख-शाँति से मिस्र में आ जाओ ।

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا

(१००) तथा अपने सिंहासन पर अपने माता-पिता[4] को उच्च स्थान पर बिठाया तथा सब

---

[1]क्योंकि मेरे पास ज्ञान का एक साधन वह्यी (प्रकाशना) भी है, जो तुममें से किसी के पास नहीं है । इस वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों को हालात से आवश्यकतानुसार तथा कारणवश अवगत करता रहता है ।

[2]तुरन्त क्षमा-याचना न करके क्षमा-याचना का वचन दिया । उद्देश्य यह था कि रात्रि के अन्तिम पहर में, जो अल्लाह के विशेष भक्तों का अल्लाह की इबादत करने का विशेष समय होता है, अल्लाह से उनकी क्षमा के लिये प्रार्थना करूँगा ।

[3]अर्थात आदर-सम्मान के साथ उन्हें अपने निकट स्थान दिया तथा उनका बहुत सत्कार किया ।

[4]कुछ व्याख्याकारों का विचार है कि यह सौतेली माता तथा सगी मौसी थीं, क्योंकि यूसुफ़ की माता का बिनयामीन के जन्म के पश्चात देहान्त हो गया था, आदरणीय याक़ूब ने उनके देहान्त के पश्चात उनकी बहन के साथ विवाह कर लिया था । यही

لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ ۡ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ؕ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ؕ اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۱۰۰﴾

उसके समक्ष दण्डवत हो गये[1] तथा तब कहा कि पिताजी ! यह मेरे प्रथम स्वप्न का फल है [2] मेरे प्रभु ने उसे साकार कर दिखाया। उस ने मेरे साथ बड़ा उपकार किया जबकि मुझे कारागार [3] से निकाला तथा आप लोगों को रेगिस्तान (मरूस्थल) से[4] ले आया, उस भेद के पश्चात जो शैतान ने मुझ में तथा मेरे भाईयों में डाल दिया था। [5] मेरा प्रभु जो चाहे उसके लिए अच्छी व्यवस्था करने वाला है तथा सर्वज्ञाता विज्ञानी है।

मौसी (ख़ाला) अब आदरणीय याक़ूब के साथ मिस्र गयी थीं (फ़तहुल क़दीर) परन्तु इमाम इब्ने जरीर तबरी ने इसके विपरीत यह कहा है कि यूसुफ़ की माता का देहान्त नहीं हुआ था तथा वही सगी माता साथ थीं। (इब्ने कसीर)

[1]कुछ ने इसका अनुवाद यह किया है कि मान-सम्मान के लिये यूसुफ़ के समक्ष झुक गये परन्तु وَ خَرُّوا له سُجَّدًا के शब्द बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के समक्ष माथा रख दिये। यह सिजद: (दण्डवत) माथा टेकने के अर्थों में है फिर भी यह सजद: सम्मान के लिये है, वंदना के रूप में नहीं तथा सम्मान सूचक सजद: आदरणीय याक़ूब के धर्म-विधान में वैध था। इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये आदर-मान हेतु सजद: करना अवैध कर दिया गया, तथा अब सम्मान स्वरूप सजदा भी किसी को करना वर्जित है।

[2]अर्थात आदरणीय यूसुफ़ ने जो स्वप्न देखा था इतनी परीक्षाओं को पार करने के पश्चात अन्तत: उसका यह फल सामने आया कि अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ को राजसिंहासन पर बैठाया तथा माता-पिता सहित सभी भाईयों ने उनको दण्डवत किया।

[3]अल्लाह के उपकार में कुऐं से निकलने की चर्चा नहीं किया ताकि भाई लज्जित न हों। यह नबूअत (ईशदूत) का आचरण है।

[4]मिस्र जैसे विकसित क्षेत्र की अपेक्षा किनआन का स्थान एक मरूस्थल का सा था इसी लिये उसे بَدْوٌ शब्द से वर्णित किया।

[5]यह भी एक दयापूर्ण आचरण का नमूना है कि भाईयों पर तनिक भी आक्षेप न लगाये तथा शैतान को इस कार्यवाही का कारण ठहराया।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۣ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠١﴾

(१०१) हे मेरे प्रभु ! तूने मुझे राज्य प्रदान किया[1] तथा मुझे स्वप्नों के फल का ज्ञान दिया[2] हे आकाशों तथा धरती के उत्पन्न करने वाले ! तू ही दुनियाँ तथा आख़िरत में मेरा संरक्षक तथा सहायक है, तू मुझे मुसलमान की अवस्था में मार तथा पुण्य करने वालों में सम्मिलित कर दे ।[3]

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है जिस की हम आपकी ओर वह्यी (प्रकाशना) कर रहे हैं । तो आप उनके पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी तथा वे छल तथा कपट करने लगे थे ।[4]

---

[1]अर्थात मिस्र का राज्य प्रदान किया जैसाकि विस्तृत वर्णन हो चुका है ।

[2]आदरणीय यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, जिन पर अल्लाह की ओर से प्रकाशना अवतरण होती तथा विशेष तथा मुख्य बातों का ज्ञान उनको दिया जाता था । अत: इस नबूअत के ज्ञान के प्रकाश में पैग़म्बर स्वप्नों का फल भी ठीक-ठीक निकाल लेते थे । फिर भी स्वप्न फल निकालने की यह योग्यता अल्लाह (परमेश्वर) अब भी किसी को प्रदान कर देता है ।

[3]अल्लाह तआला ने आदरणीय यूसुफ़ पर जो उपकार किये उन्हें याद करके तथा अल्लाह तआला के अन्य गुणों का वर्णन करके प्रार्थना कर रहे हैं कि जब मुझे मृत्यु (मौत) आये तो इस्लाम की अवस्था में आये तथा मुझे सज्जन (पुनीत) पुरूषों के साथ मिला दे । इससे तात्पर्य आदरणीय यूसुफ़ के पूर्वज आदरणीय इब्राहीम तथा इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस प्रार्थना से यह शंका उत्पन्न हुई कि आदरणीय यूसुफ़ ने मृत्यु की प्रार्थना की यद्यपि यह मृत्यु की प्रार्थना नहीं है, अन्तिम क्षण तक इस्लाम पर दृढ़ रहने की प्रार्थना है ।

[4]अर्थात यूसुफ़ के साथ, जबकि उन्हें कुऐं में फेंक आये अथवा तात्पर्य आदरणीय याक़ूब है अर्थात उनको यह कह कर कि यूसुफ़ को भेड़िया खा गया है तथा यह उसकी कमीज़ है, जो रक्तरंजित है उनके साथ छल किया गया । अल्लाह तआला ने इस स्थान पर इस बात का खण्डन किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को परोक्ष का ज्ञान था । परन्तु यह खण्डन साधारण ज्ञान की नही है क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको

وَمَآ أَكۡثَرُ ٱلنَّاسِ وَلَوۡ حَرَصۡتَ بِمُؤۡمِنِينَ ۝١٠٣

(१०३) यद्यपि आप लाख चाहें अधिकतर लोग ईमानदार न होंगे ।[1]

وَمَا تَسۡـَٔلُهُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ أَجۡرٍۚ إِنۡ هُوَ إِلَّا ذِكۡرٞ لِّلۡعَٰلَمِينَ ۝١٠٤

(१०४) तथा आप उनसे उस पर कोई मज़दूरी नहीं माँग रहे हैं ।[2] यह तो समस्त संसार के लिये शिक्षा ही शिक्षा है ।[3]

وَكَأَيِّن مِّنۡ ءَايَةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ يَمُرُّونَ عَلَيۡهَا وَهُمۡ

(१०५) तथा आकाशों तथा धरती में बहुत से प्रतीक हैं, जिनसे ये मुँह फेर कर निकल

प्रकाशना के द्वारा अवगत करा दिया। यह खण्डन प्रत्यक्ष दर्शन का है कि उस समय आप वहाँ उपस्थित नहीं थे। इसी प्रकार ऐसे लोगों से आपका सम्बन्ध तथा सम्पर्क नहीं रहा है जिनसे आप ने सुना हो। यह केवल अल्लाह तआला ही है जिसने आपको इस अनदेखी घटना की सूचना दी है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी हैं तथा अल्लाह तआला की ओर से आप पर प्रकाशना अवतरित होती है। अल्लाह तआला ने अन्य भी कई स्थानों पर इसी प्रकार अर्न्तज्ञानी तथा परोक्षज्ञ होने का खण्डन किया है। जैसे देखिये *सूर: आले इमरान*-७ तथा ४४, *अल-कसस*-४५ तथा ४६, *सूर: स्वाद*- ६९ तथा ७० ।

[1]अर्थात अल्लाह तआला आप को पूर्व कालिक घटनाओं से अवगत करा रहा है ताकि लोग उनसे शिक्षा लें तथा अल्लाह के पैग़म्बरों (ईशदूतों) के मार्ग का अनुसरण करें तथा सफलता के अधिकारी बन जायें। परन्तु इसके उपरान्त भी लोगों की अधिकतर संख्या ईमान लाने वाली नहीं है क्योंकि वे विगत के समुदायों की घटनायें सुनते तो हैं, परन्तु शिक्षा प्राप्त करने के लिये नहीं, केवल मनोरंजन तथा आनंद के लिये। इसलिये वे ईमान से वंचित रहते हैं।

[2]कि जिस से उनको यह शंका हो कि यह नबूअत का दावा तो केवल धन एकत्रित करने का बहाना है।

[3]ताकि लोग इससे शिक्षा प्राप्त करें तथा अपना यह लोक तथा परलोक सजा लें। अब दुनियाँ के लोग इससे आँखें फेरे रखें तथा इससे शिक्षा न प्राप्त करें तो लोगों की त्रुटि है तथा उनका दुर्भाग्य है, क़ुरआन तो वास्तव में दुनियाँ वालों के लिये संमार्ग तथा शिक्षा ही के लिये आया है।

عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠٥﴾

जाते हैं ।[1]

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ ﴿١٠٦﴾

(१०६) तथा उनमें से अधिकतर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के उपरान्त भी मुशरिक ही हैं ।[2]

أَفَأَمِنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١٠٧﴾

(१०७) क्या वे इस बात से निर्भय हो गये हैं कि उनके पास अल्लाह के प्रकोपों में से कोई सामान्य प्रकोप आ जाये अथवा उन पर सहसा क़ियामत टूट पड़े तथा वे अचेत हों ।

قُلْ هَٰذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٨﴾

(१०८) (आप) कह दीजिये,मेरा यही मार्ग है । मैं तथा मेरे अनुयायी अल्लाह की ओर बुला रहे हैं, पूर्ण विश्वास तथा निश्चता के उपरान्त[3] तथा अल्लाह पवित्र

---

[1]आकाश तथा धरती की उत्पत्ति तथा उनमें असंख्य वस्तुओं का अस्तित्व, इस बात का प्रमाण है कि एक स्रष्टा तथा रचयिता है जिसने इन वस्तुओं को बनाया है तथा एक नियोजक वही है जो उनका ऐसा प्रबन्ध कर रहा है कि आदिकाल से यह प्रबन्ध चल रहा है परन्तु इन में कभी आपस में टकराव तथा दुर्घटना नहीं हुई है। परन्तु लोग इन चीज़ों को देखते हुए यूँ ही चले जाते हैं इन पर विचार नहीं करते तथा न उनसे प्रभु का परिचय प्राप्त करते हैं।

[2]यह वह वास्तविकता है जिसे क़ुरआन ने विभिन्न स्थानों पर बड़ी स्पष्टता के साथ वर्णन किया है कि ये मूर्तिपूजक यह स्वीकार करते हैं कि आकाश तथा धरती का स्रष्टा, स्वामी पोषक तथा संचालक केवल अल्लाह तआला ही है। परन्तु इसके उपरान्त इबादत में अल्लाह के साथ अन्यों को भी सम्मिलित कर लेते हैं तथा इस प्रकार अधिकतर लोग मुशरिक (बहुदेववादी) हैं। अर्थात प्रत्येक युग के लोग तौहीद उपासना (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं। आज के समाधि पूजकों का शिर्क भी यही है कि वह क़ब्रों में गड़े महापरूषों को पूजा गुणों का अधिकारी समझकर उन्हें सहायता के लिये पुकारते भी हैं तथा इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

[3]अर्थात यह तौहीद (एकेश्वरवाद) का मार्ग ही मेरा मार्ग है, बल्कि प्रत्येक पैग़म्बरों का यही मार्ग रहा है, इसी की ओर मैं तथा मेरे अनुयायी दृढ़ विश्वास के साथ तथा धार्मिक नियमों के प्रमाणों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

है[1] तथा मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।

(१०९) तथा आप से पूर्व हमने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब पुरूष ही थे, जिनकी ओर हम वह्यी (प्रकाशना) उतारते गये।[2] क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पूर्व के लोग का कैसा परिणाम हुआ ? नि:संदेह आख़िरत का घर परहेज़गारों (संयम बरतने वालों) के लिये अति उत्तम है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते ?

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوۡحِىۡۤ اِلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡقُرٰىؕ اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡؕ وَلَدَارُ الۡاٰخِرَةِ خَيۡرٌ لِّلَّذِيۡنَ اتَّقَوۡاؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ۝١٠٩

(११०) यहाँ तक कि जब रसूल निराश होने लगे[3] तथा समुदाय के लोग यह विचार करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया।[4] तुरन्त हमारी

حَتّٰۤى اِذَا اسۡتَيۡـئَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوۡۤا اَنَّهُمۡ قَدۡ كُذِبُوۡا جَآءَهُمۡ

[1]अर्थात मैं शुद्धता तथा पवित्रता का वर्णन कर रहा हूँ, इस बात से कि उसका कोई साझीदार, समतुल्य, प्रतिमा अथवा मंत्री तथा सलाहकार अथवा सन्तान तथा पत्नी हो। वह इन सभी वस्तुओं से पवित्र है।

[2]यह आयत इस बात का प्रमाण है कि सभी नबी पुरूष हुए हैं, स्त्रियों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी प्रकार उनका सम्बन्ध नगरों से था, उनमें से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था। क्योंकि ग्रामीण तथा देहाती नगरवासियों की अपेक्षा स्वाभाविक रूप से कठोर तथा व्यवहार में कटु होते हैं तथा नगरवासी उनकी अपेक्षा कोमल, सरल तथा सभ्य होते हैं तथा यह विशेषतायें नबूअत के लिये आवश्यक हैं।

[3]यह निराशा अपने समुदाय के ईमान न लाने से हुई।

[4]अर्थात इन पैग़म्बरों के अनुयायियों के हृदय में यह शंका उत्पन्न होंने लगी कि उनसे यूँ ही यातना का झूठा वायदा किया गया है, यातना शायद आयेगी ही नहीं। ध्यान रहे कि मात्र इस प्रकार की शंका का उत्पन्न होना ईमान के विरूद्ध नहीं है। कुछ ने ظنوا का कर्ता समुदाय अर्थात काफ़िर लोगों को कहा है अर्थात काफ़िर लोग यातना की चेतावनी पर पहले तो भयभीत हुए परन्तु जब अधिक देर होने लगी तो विचार किया कि यातना तो आती नहीं है (जैसाकि पैग़म्बर की ओर से दावा हो रहा है) तथा न आता दिखाई पड़ रहा है, प्रतीत होता है कि नबियों से भी यूँ ही झूठा वायदा किया गया है। तात्पर्य नबी

نَصۡرُنَا فَنُجِّیَ مَنۡ نَّشَآءُ ؕ وَلَا یُرَدُّ بَاۡسُنَا عَنِ الۡقَوۡمِ الۡمُجۡرِمِیۡنَ ﴿۱۱۰﴾

सहायता उन्हें आ पहुँची[1] जिसे हमने चाहा उसे मुक्ति प्रदान की।[2] बात यह है कि हमारा प्रकोप पापियों से वापस नहीं किया जाता।

لَقَدۡ كَانَ فِیۡ قَصَصِهِمۡ عِبۡرَةٌ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِیۡثًا یُّفۡتَرٰی وَلٰكِنۡ تَصۡدِیۡقَ الَّذِیۡ بَیۡنَ یَدَیۡهِ وَتَفۡصِیۡلَ كُلِّ شَیۡءٍ وَّهُدًی وَّرَحۡمَةً لِّقَوۡمٍ یُّؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

(१११) इनकी कथाओं में बुद्धिमानों के लिये नि:संदेह शिक्षा तथा चेतावनी है, यह क़ुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह युक्ति-शास्त्र है, उन किताबों के लिये जो इससे पूर्व की हैं। तथा प्रत्येक वस्तु का सविस्तार वर्णन एवं मार्गदर्शन तथा कृपा है ईमान वालों के लिये।[3]

करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सान्त्वना देना है कि आपके समुदाय पर यातना में जो देरी हो रही है, उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। प्राचीन काल के समुदायों पर भी यातना में देरी की गयी थी तथा अल्लाह की ओर से उसकी चाहत तथा ज्ञानानुसार उन्हें अत्यधिक समय प्रदान किया गया। यहाँ तक कि रसूल अपने समुदाय के ईमान से निराश हो गये तथा लोग यह विचार करने लगे कि शायद उन्हें यातना का यूँ ही झूठ कह दिया गया है।

[1]जब उनकी निराशा इस भयानक शंका तथा संदेह तक पहुँच गयी तो तुरन्त हमारी सहायता उनके पास पहुँच गयी तथा उनके दिलों से शंका के काँटे निकल गये। इसमें वास्तव में अल्लाह तआला की उस अवसर देने की नीति का वर्णन है, जो वह अवज्ञाकारियों को देता है, यहाँ तक कि इस विषय में वह अपने पैग़म्बर की इच्छा के विपरीत भी अधिक से अधिक समय प्रदान करता है, शीघ्रता नहीं करता, यहाँ तक कि कई बार पैग़म्बरों के अनुयायी भी यातना से निराश होकर यह समझने लगते हैं कि उनसे यूँ ही मिथ्यावचन किया गया है।

[2]यह मुक्ति प्राप्त करने वाले ईमान वाले ही होते थे।

[3]अर्थात यह क़ुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कथा तथा अन्य समुदायों की घटनाओं का वर्णन है, कोई गढ़ा हुआ नही है। बल्कि यह पूर्व की किताबों की पुष्टि करने वाला तथा उसमें धर्म के विषयों सभी आवश्यक बातों का विस्तृत वर्णन है तथा ईमानवालों के लिये संमार्ग तथा कृपा है।

सूरतु-रांद-१३

سُوْرَةُ الرَّعْدِ

सूर: अल-राअद मदीने में उतरी तथा इस में तैंतालीस आयतें एवं छ: रुकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अत्यन्त कृपालु एवं अत्यन्त दयालु है ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

(१) अलिफ़॰ लाम॰ मीम॰ रा॰ । ये क़ुरआन की आयतें हैं तथा जो कुछ आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है सब सत्य है । परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते (विश्वास नहीं करते) ।

الٓمّٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ①

(२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों को बिना स्तम्भ के ऊँचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो । फिर वह अर्श पर स्थिर है,[1] उसी ने सूर्य तथा चन्द्रमा को आधीन बना रखा है । प्रत्येक एक निर्धारित समय तक चल रहा है ।[2] वही कार्य की व्यवस्था करता है, वह

اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ

---

[1]"इस्तवा अलल अर्श" का भावार्थ इससे पूर्व वर्णन हो चुका है कि इससे तात्पर्य अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है । मोहद्देसीन (हदीसों के ज्ञानियों) का यही पथ है । वह इसका विस्तृत कल्पना नहीं करते, जैसे कुछ अन्य गिरोह इसमें तथा प्रभु के अन्य गुणों में कष्ट कल्पना करते हैं । परन्तु मोहद्देसीन कहते हैं कि इस अवस्था का वर्णन नहीं किया जा सकता है तथा न इसे किसी वस्तु के साथ उपमा दी जा सकती है । *(अल-शूरा)*

[2]इसका एक अर्थ यह भी है कि एक निर्धारित समय तक अर्थात क़ियामत तक अल्लाह के आदेश से चलते रहेंगे । जैसाकि कहा है ।

﴿ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴾

"तथा सूर्य अपने स्थिर होने के समय तक चल रहा है ।" (*सूर: यासीन*-३८)

दूसरा अर्थ यह है कि चन्द्रमा तथा सूर्य दोनों अपने-अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहते हैं, सूर्य अपने चक्र एक वर्ष में तथा चन्द्रमा एक महीने में पूरा कर लेता है । जिस प्रकार कहा ।

بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ②

अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर वर्णन कर रहा है कि तुम अपने प्रभु से मिलने का विश्वास कर लो।

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا ۖ وَمِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ

(३) तथा उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया तथा उसमें पर्वत तथा नदियाँ उत्पन्न कर दी हैं,[1] तथा उसमें हर प्रकार के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं।[2] वह रात्रि

﴿وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ﴾

"तथा हमने चन्द्रमा के अनेक स्थान निर्धारित किये हैं।" *(सूर: यासीन-३९)*

सात बड़े ग्रह-समूह हैं, जिनमें से दो सूर्य तथा चन्द्रमा हैं। यहाँ केवल इन दो का वर्णन किया है क्योंकि यही दो सबसे विशाल तथा महत्वपूर्ण हैं। जब यह दोनों भी अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो दूसरे ग्रह उससे अधिक अधीन हैं। तथा जब यह अल्लाह के आदेश के अधीन हैं तो यह देवता अथवा पूजनीय नहीं हो सकते, पूजा के योग्य तो वही है जिसने उनको अधीन बना रखा है इसलिए कहा।

﴿لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ﴾

"सूर्य तथा चन्द्रमा के समक्ष शीश न झुकाओ उस अल्लाह के समक्ष शीश झुकाओ जिसने उन्हें उत्पन्न किया यदि तुम केवल उसकी इबादत करना चाहते हो।" (सूर: *हा॰मीम॰ सजद:-३८*)

﴿وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ﴾

"सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे, सब उसके आदेश के अधीन हैं।" (सूर: *अल-आराफ़, ५४*)

[1]धरती की लम्बाई-चौड़ाई का अनुमान भी जनसामान्य के लिये कठिन है तथा उच्च तथा विशाल पर्वतों के द्वारा धरती में जैसे कील गाड़ी गयी हैं। नदियों, नालों तथा स्रोतों की ऐसी श्रृंखला स्थापित किया कि जिससे मनुष्य स्वयं भी लाभान्वित होते हैं तथा अपने खेतों की सिंचाई भी करते हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार के अनाज तथा फल पैदा होते हैं, जिनके आकार-प्रकार भी भिन्न होते हैं तथा स्वाद में भिन्न होते हैं।

[2]इसका एक अर्थ यह है नर तथा मादा दोनों बनाये जैसाकि आधुनिक अविष्कारों ने इसकी पुष्टि कर दी है। दूसरा अर्थ (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, श्याम-श्वेत तथा स्वादिष्ट-कटुस्वाद इसी प्रकार एक-दूसरे से भिन्न तथा विपरीत प्रकार का पैदा किया।

اثْنَيْنِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

से दिन को छिपाता है। निश्चय ही विचार एवं चिन्तन करने वालों के लिये उसमें बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं।

وَفِى الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّ زَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۙ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِى الْاُكُلِ ۗ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝

(४) तथा धरती में विभिन्न प्रकार के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं।[1] तथा अंगूरों के बाग़ हैं तथा खेत हैं एवं खजूरों के वृक्ष हैं। शाखाओं वाले तथा कुछ ऐसे हैं[2] जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं। फिर भी हम को एक पर फलों में श्रेष्ठता देते हैं।[3] इसमें बुद्धिमानों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَاِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا ءَاِنَّا لَفِىْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ الْاَغْلٰلُ

(५) तथा यदि तुझे आश्चर्य हो तो वास्तव में उनका यह कहना आश्चर्यजनक है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे।[4] यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने प्रभु से कुफ़्र किया। तथा यही हैं जिनकी

---

[1] متجاورات एक-दूसरे के निकट तथा सामान्तर अर्थात धरती का एक क्षेत्र विकसित तथा उपजाऊ है, अत्यधिक पैदावार देता है। उसके साथ ही ऊसर भूमि है, जिसमें किसी प्रकार की भी पैदावार नहीं होती।

[2] صنوان का एक अर्थ मिले हुए तथा غير صنوان के अलग-अलग किये गये हैं। दूसरा अर्थ صنوان एक वृक्ष जिसकी कई शाखायें तथा तने हों, जैसे अनार, इंजीर तथा कुछ खजूरें। तथा غير صنوان जो इस प्रकार का न हो अपितु एक ही तने वाला हो।

[3]अर्थात धरती भी एक, पानी, वायु भी एक। परन्तु फल तथा अनाज विभिन्न प्रकार के तथा उनके स्वाद एवं बनावट भी एक-दूसरे से भिन्न।

[4]अर्थात जिस शक्ति ने प्रथम बार जन्म दिया, उसके लिये पुन: उस वस्तु का बनाना कोई कठिन कार्य नहीं। परन्तु यह काफ़िर विचित्र बात कहते हैं कि पुन: हम किस प्रकार पैदा किये जायेंगे ?

فِيٓ أَعۡنَاقِهِمۡۖ وَأُوْلَٰٓئِكَ أَصۡحَٰبُ ٱلنَّارِۖ هُمۡ فِيهَا خَٰلِدُونَ ٥

गर्दनों में फंदे होंगे। तथा यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उसमें सदैव रहेंगे।

وَيَسۡتَعۡجِلُونَكَ بِٱلسَّيِّئَةِ قَبۡلَ ٱلۡحَسَنَةِ وَقَدۡ خَلَتۡ مِن قَبۡلِهِمُ ٱلۡمَثُلَٰتُۗ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغۡفِرَةٖ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلۡمِهِمۡۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ ٱلۡعِقَابِ ٦

(६) तथा जो तुझसे दण्ड की माँग में शीघ्रता कर रहे हैं सुख से पूर्व ही, निश्चय उनसे पूर्व (उदाहरण स्वरूप) यातनायें आ चुकी हैं।[1] तथा निःसंदेह तेरा प्रभु क्षमावान है, लोगों के अनायास अत्याचार का भी।[2] तथा यह भी निश्चित बात है कि तेरा प्रभु कठोर दण्ड देने वाला भी है।[3]

---

[1]अर्थात अल्लाह के प्रकोप से समुदाय तथा आबादियों की बर्बादी के कई उदाहरण पूर्व में गुज़र चुके हैं, इसके उपरान्त ये प्रकोप शीघ्र माँगते हैं? यह काफ़िरों के उत्तर में कहा गया जो कहते थे कि हे पैग़म्बर! यदि तू सच्चा है तो वह प्रकोप हम पर ले आ, जिससे तू हमें डराता रहता है।

[2]अर्थात लोगों के अत्याचार तथा अवज्ञा के उपरान्त भी वह प्रकोप में शीघ्रता नहीं करता, अपितु समय देता है कई बार इतनी देर कर देता है कि निर्णय क़ियामत पर छोड़ देता है। यह उसकी दया तथा कृपा एवं करूणा का परिणाम है। यदि वह तुरन्त पकड़ लेने तथा यातना देने पर आ जाये तो इस पूरी धरती पर एक मनुष्य शेष न रहे।

﴿وَلَوۡ يُؤَاخِذُ ٱللَّهُ ٱلنَّاسَ بِمَا كَسَبُواْ مَا تَرَكَ عَلَىٰ ظَهۡرِهَا مِن دَآبَّةٖ﴾

"यदि अल्लाह तआला लोगों को उनके कर्म के कारण पकड़ने लगे तो धरती पर एक भी जीव न छोड़े।" (*सूरः फ़ातिर-४५*)

[3]यह अल्लाह के दूसरे गुण का वर्णन है ताकि मनुष्य एक ही ओर दृष्टि न रखे। दूसरी ओर भी देखता रहे। क्योंकि एक ही ओर तथा एक ही कोण से निरन्तर देखते रहने से बहुत-सी वस्तुयें अदृश्य रह जाती हैं। इसलिये क़ुरआन करीम में जहाँ अल्लाह की दया, कृपा तथा क्षमा का वर्णन होता है, तो साथ ही साथ उसकी दूसरी विशेषता, प्रभुत्व प्रचण्डता तथा शक्ति का वर्णन भी मिलता है। जैसाकि यहाँ भी है ताकि आशा तथा भय दोनों भाव समक्ष रहें, क्योंकि यदि आशा ही आशा सामने रहे तो मनुष्य अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने के लिये निडर हो जाता है तथा यदि भय ही भय हर समय दिल तथा मस्तिष्क में छाया रहे, तो अल्लाह की कृपा से निराश हो जाता है तथा दोनों ही

(७) तथा काफ़िर (कृतघ्न) कहते हैं कि उस पर उसके प्रभु की ओर से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी | बात यह है कि आप तो केवल सचेत करने वाले हैं[1] तथा प्रत्येक समुदाय के लिये मार्गदर्शन करने वाला है |[2]

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ ۖ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧

बातें उचित नहीं हैं तथा मनुष्य के विनाश का कारण बन सकती हैं | इसीलिये कहा जाता है |

«الإِيمَانُ بَيْنَ الْخَوفِ وَالرَّجَاءِ»

"ईमान भय तथा आशा के मध्य है |"

अर्थात दोनों ही बातों के मध्य संतुलन तथा समानता का नाम ईमान है | मनुष्य अल्लाह के प्रकोप से निर्भय हो तथा न उसकी कृपा से निराश हो | इस विषय के लिये देखें *सूर: अल-अनाम-४७, सूर: अल-आराफ़-१६७, सूर: अल-हिज्र-४९* तथा ५० आदि आयतें |

[1]प्रत्येक नबी को अल्लाह तआला हालात तथा आवश्यकतानुसार तथा अपनी नीति तथा विवेक के आधार पर कुछ निशानियाँ तथा चमत्कार प्रदान करता है | परन्तु काफ़िर अपनी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार के अभिलाषी रहे हैं | जैसे मक्का के काफ़िर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते सफ़ा नामक पर्वत को सोना का बना दिया जाये अथवा पर्वतों के स्थान पर स्रोत तथा नदियाँ बहने लगें आदि-आदि | जब उनकी इच्छाओं के अनुसार चमत्कार न दिखलाया जाता तो कहते कि इस पर कोई निशानी, चमत्कार क्यों न अवतरित किया गया ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "हे पैग़म्बर ! तेरा काम केवल आमंत्रण तथा सतर्क कर देना है | वह तू करता रह | कोई स्वीकार करे न करे उससे तुझे कोई मतलब नहीं, इसलिये कि मार्ग पर चला देना यह हमारा काम है | तेरा काम मार्ग दिखाना है, उस मार्ग पर चला देना, यह तेरा नहीं, हमारा काम है |"

[2]अर्थात प्रत्येक समुदाय के मार्गदर्शन के लिये अल्लाह तआला ने मार्गदर्शक अवश्य भेजा है | यह अलग बात है कि समुदायों ने यह मार्ग अपनाया अथवा नहीं अपनाया | परन्तु सीधे मार्ग का दर्शन करने के लिये संदेशवाहक प्रत्येक समुदाय के अंदर अवश्य आया |

﴿وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ﴾

"प्रत्येक समुदाय में एक पथ दर्शक अवश्य आया है |" (*सूर: फ़ातिर-२४*)

(८) मादा अपने गर्भ में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है।[1] तथा पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी।[2] प्रत्येक वस्तु उसके पास अनुमानित है।[3]

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۭ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ ⑧

(९) गुप्त तथा खुली बातों का वह ज्ञान रखने वाला है, सबसे बड़ा तथा सबसे उच्च तथा उत्तम है।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ ⑨

(१०) तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना तथा उच्च स्वर में उसे कहना तथा जो रात्रि को छिपा हो तथा जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर समान हैं।

سَوَاۗءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَ سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ⑩

(११) उस के रक्षक[4] मनुष्य के आगे पीछे नियुक्त हैं, जो अल्लाह के आदेश से उसकी रक्षा करते हैं। किसी समुदाय की अवस्था अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे स्वयं न बदलें, जो उन के हृदय[5] में है।

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاِذَآ

---

[1]माता के गर्भ में क्या है ? नर है अथवा मादा, सुन्दर है अथवा कुरूप, सपूत अथवा कुपूत, दीर्घ आयु अथवा अल्प आयु ? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

[2]इससे तात्पर्य गर्भ की अवधि है जो सामान्यत: नौ माह होता है, परन्तु घटती तथा बढ़ती भी है, किसी समय यह दस माह तथा किसी समय सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी ज्ञान अल्लाह के अतिरिक्त किसी को नहीं।

[3]अर्थात किसी का जीवनकाल कितना है ? उसे भोजन का कितना भाग मिलेगा ? इसका पूरा अनुमान अल्लाह को है।

[4] معقبات बहुवचन है معقبة का। एक-दूसरे के पीछे आने वाले अर्थात फ़रिश्ते हैं, जो बारी-बारी एक-दूसरे के पश्चात आते हैं। दिन के फ़रिश्ते जाते हैं तो रात के फ़रिश्ते आ जाते हैं। शाम के जाते हैं तो दिन के आ जाते हैं।

[5]इसकी व्याख्या के लिये देखें *सूर: अंफ़ाल-५३* की व्याख्या।

أَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ⑪

अल्लाह (तआला) जब किसी समुदाय को दण्ड देने का निर्णय कर लेता है, तो वह बदला नहीं करता तथा अतिरिक्त उसके कोई भी उनका संरक्षक भी नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ⑫

(१२) वह अल्लाह ही है जो तुम्हें विद्युत की चमक डराने तथा आशा दिलाने के लिये[1] दिखाता है तथा भारी बादलों को पैदा करता है।[2]

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ⑬

(१३) तथा गर्जन उसकी प्रशंसा तथा महिमा का वर्णन करती है तथा फ़रिश्ते भी उसके भय से,[3] वही आकाश से बिजली गिराता है तथा जिस पर चाहता है, उस पर डालता है।[4] काफ़िर अल्लाह के विषय में लड़-झगड़ रहे हैं तथा अल्लाह सर्वशक्तिशाली है।[5]

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ

(१४) उसी को पुकारना सत्य है,[6] जो लोग अन्यों को उसके अतिरिक्त पुकारते हैं वे

---

[1]जिससे राहगीर यात्री डरते हैं तथा घरों में रहने वाले किसान तथा कृषक उसके आशीर्वाद तथा लाभ की आशा रखते हैं।

[2]भारी बादलों से तात्पर्य वह बादल जिनमें वर्षा का पानी होता है।

[3]जैसा अन्य स्थान पर कहा।

﴿ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ ﴾

"प्रत्येक वस्तु अल्लाह की महिमा का वर्णन करती है।" (सूर: *बनी इस्राईल-४४*)

[4] अर्थात इसके द्वारा जिसे चाहता है नाश कर डालता है।

[5] مِحَالٌ का अर्थ शक्ति, पूछ-ताछ तथा प्रगाढ़ आदि के किये गये हैं। अर्थात वह अत्यन्त शक्तिशाली, अत्यधिक पूछ करने वाला तथा प्रगाढ़ विचार वाला है।

[6]अर्थात भय तथा आशा के समय उसी एक अल्लाह को पुकारना उचित है क्योंकि वही सभी की पुकार सुनता तथा स्वीकार करता है अथवा आमन्त्रण, इबादत (वंदना) के अर्थ

بِشَىۡءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيۡهِ اِلَى الۡمَآءِ لِيَبۡلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الۡكٰفِرِيۡنَ اِلَّا فِىۡ ضَلٰلٍ ﴿۱۴﴾

उनकी किसी पुकार का उत्तर नहीं देते, जैसे कोई व्यक्ति अपने हाथ पानी की ओर फैलाये हुए हो कि उसके मुख में पड़ जाये, जबकि वह पानी उसके मुख में पहुँचने वाला नहीं ।[1] उन भ्रष्टाचारियों की जितनी पुकार है सभी भ्रष्ट है ।[2]

وَلِلّٰهِ يَسۡجُدُ مَنۡ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ طَوۡعًا وَّكَرۡهًا وَّظِلٰلُهُمۡ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ ۩ ﴿۱۵﴾

(१५) तथा अल्लाह ही के लिये आकाशों तथा धरती के सभी जीव प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता से सिजद: (दण्डवत) करते हैं तथा उनकी छाया भी प्रात: एवं संध्या ।[3]

में है । उसी की इबादत सत्य एवं उचित है, उसके अतिरिक्त कोई इबादत (वन्दना) के योग्य नहीं, क्योंकि सृष्टि का स्रष्टा, स्वामी तथा चलाने वाला केवल वही है, इसलिये इबादत भी केवल उसी का अधिकार है ।

[1]अर्थात जो अल्लाह को छोड़कर अन्यों को सहायता के लिये पुकारते हैं, उनकी तुलना ऐसी है जैसे कोई व्यक्ति दूर से पानी की ओर अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, स्पष्ट है कि पानी अचल है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की आवश्यकता क्या है ? तथा न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुख तक पहुँचने की माँग कर रहा है । तथा न उसमें यह शक्ति है कि अपने स्थान से चलकर उसके हाथ अथवा मुख तक पहुँच जाये । इसी प्रकार ये मूर्तिपूजक, अल्लाह के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है तथा उसकी अमुक आवश्यकता है । तथा न उस आवश्यकता की पूर्ति की उनमें शक्ति ही है ।

[2]तथा व्यर्थ भी है । क्योंकि उससे उनको कोई लाभ नहीं होगा ।

[3]इसमें अल्लाह तआला की महिमा एवं शक्ति का वर्णन है कि प्रत्येक वस्तु पर उसका अधिकार है तथा प्रत्येक वस्तु उसके अधीन तथा उसके समक्ष नतमस्तक है, चाहे ईमानवालों की तरह प्रसन्नता से करें अथवा मूर्तिपूजकों की भाँति अप्रसन्नता से । तथा उनकी छाया भी प्रात:-सायं दण्डवत होती हैं । जैसे अन्य स्थान पर कहा ।

﴿ أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ يَتَفَيَّأُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِّلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ﴾

"क्या उन्होंने नही देखा कि अल्लाह ने जो वस्तु भी उत्पन्न की हैं उनकी छाया दाहिने तथा बायें से अल्लाह को दण्डवत करती हुई ढलती हैं तथा वे विनम्रता करती हैं ।" (*सूर: अन-नहल-४८*)

(१६) (आप) पूछिये कि आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है ? कह दीजिये अल्लाह ।[1] कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के अतिरिक्त अन्यों को सहायक बना रहे हो जो स्वयं अपने प्राण के भी भले-बुरे का अधिकार नहीं रखते ।[2] कह दीजिये क्या अंधा तथा आँखों वाला समान हो सकता है ? अथवा क्या अंधकार तथा प्रकाश समान हो सकता है ?[3] क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह उत्पत्ति की है कि उनके देखने में उत्पत्ति संदिग्ध हो गई ?

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ قُلِ اللّٰهُ ۭ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ڏ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ڬ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۭ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑯

इस दण्डवत की स्थिति क्या है ? यह अल्लाह भली-भाँति जानता है अथवा दूसरा भावार्थ इसका यह है कि काफ़िर सहित सभी सृष्टि अल्लाह के आदेशों के अधीन है, किसी में उसके उल्लंघन की शक्ति नहीं अल्लाह तआला किसी को स्वास्थ दे, रोग दे, धनवान कर दे अथवा निर्धन बना दे, जीवन दे अथवा मृत्यु । इन उत्पत्ति के नियमों में किसी काफ़िर को भी इंकार की शक्ति नहीं ।

[1]यहाँ तो पैग़म्बरों के मुख से स्वीकार है । परन्तु क़ुरआन के अन्य स्थानों से स्पष्ट है कि मूर्तिपूजकों का उत्तर भी यही होता था ।

[2]अर्थात जब तुम्हें स्वीकार तथा मान्य है कि आकाश तथा धरती का मालिक (प्रभु) अल्लाह है, जो सभी अधिकारों का बिना किसी साझीदार के अकेला मालिक है, तो फिर तुम उसे छोड़कर ऐसों को अपना मित्र तथा पक्षधर क्यों समझते हो जो स्वयं अपने लिये लाभ-हानि का अधिकार नहीं रखते ।

[3]अर्थात जिस प्रकार अंधा तथा आँख वाला समान नहीं हो सकते, उसी प्रकार एकेश्वरवादी तथा अनेकश्वरवादी समान नहीं हो सकते । इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का हृदय एकेश्वरवाद की ज्योति से पूर्ण है, जबकि अनेकों के पुजारी उससे वंचित हैं एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का प्रकाश देखता है तथा अनेकों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का प्रकाश दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है । इसी प्रकार जिस प्रकार अंधकार तथा प्रकाश समान नहीं हो सकते । एक अल्लाह का पुजारी जिसका हृदय दिव्य ज्योति से परिपूर्ण है, तथा एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) अज्ञान तथा अंधविश्वास के अंधेरों में भटक रहा है, समान नहीं हो सकते ।

कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी वस्तुओं का उत्पत्ति कर्ता है वह अकेला है,[1] तथा सर्वशक्तिमान है।

(१७) उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले बह निकले।[2] फिर जल के धारे ने ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया।[3] तथा उस वस्तु में भी जिसको अग्नि में डाल कर तपाते हैं आभूषण अथवा सामान के लिये उसी प्रकार के झाग हैं।[4] इसी प्रकार अल्लाह तआला सत्य-असत्य को स्पष्ट करने का उदाहरण देता है।[5] अब झाग

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهُ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنفَعُ

---

[1]अर्थात ऐसी बात नहीं है कि यह किसी शंका के शिकार हो गये हों अपितु यह बात मानते हैं कि प्रत्येक वस्तु का रचयिता केवल तथा मात्र अल्लाह ही है।

[2] بِقَدَرِهَا (विस्तारानुसार) का अर्थ है नाले अर्थात घाटी (दो पर्वतों के मध्य का स्थान) संकरी हो तो कम पानी तथा विस्तृत हो तो अधिक पानी उठाती है। अर्थात क़ुरआन के उतरने को जो मार्गदर्शन तथा वर्णन का संकलन है, वर्षा होने से उपमा दी है। इसलिये कि क़ुरआन का लाभ भी वर्षा के लाभ की भाँति सामान्य है। तथा घाटियों की उपमा दी है दिल के साथ। इसलिये की घाटियों (नालों) में पानी जाकर रुकता है, जिस प्रकार क़ुरआन तथा ईमान ईमानवालों के दिलों में स्थिर होता है।

[3]उस झाग से जो पानी के ऊपर आ जाता है तथा जो घुल जाता है तथा हवायें जिसे उड़ा ले जाती हैं, कुफ़्र तात्पर्य है, जो झाग की तरह उड़ जाने वाला तथा समाप्त हो जाने वाला है।

[4]यह दूसरा उदाहरण है कि ताँबा, पीतल, सीसा अथवा स्वर्ण चाँदी के आभूषण अथवा सामान बनाने के लिये आग में तपाया जाता है, तो उस पर भी झाग आता है। इस झाग से तात्पर्य मैल-कुचैल है जो इन धातुओं के अंदर होती है। आग में तपाने से झाग के रूप में ऊपर आ जाता है फिर यह झाग भी देखते-देखते समाप्त हो जाता है तथा धात असली रूप में शेष रह जाती है।

[5]अर्थात जब सत्य तथा असत्य का आपस में सामना तथा टकराव होता है, तो असत्य को उसी प्रकार स्थाईत्व तथा स्थिरता नहीं मिलता जिस प्रकार से बाढ़ की धारा का झाग

النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَٰلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

व्यर्थ होकर चला जाता है।[1] परन्तु जो लोगों को लाभ पहुँचाने वाली वस्तुऐं हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं।[2] अल्लाह (तआला) इसी प्रकार उदाहरण दिया करता है।[3]

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٨﴾

(१८) जिन लोगों ने अपने प्रभु के आदेशों का पालन किया उनके लिये भलाई है तथा जिन लोगों ने उसके आदेश का पालन न किया यदि उनके लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, तथा उसके साथ वैसा ही अन्य भी हो, तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें।[4] यही हैं जिनके लिये बुरा हिसाब है,[5] तथा

पानी के साथ धातुओं का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातुओं के साथ शेष नहीं रहता। बल्कि समाप्त तथा नष्ट हो जाता है।

[1]अर्थात इससे कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि झाग, पानी अथवा धातु के साथ शेष नहीं बचता अपितु धीरे-धीरे बैठ जाता है अथवा हवायें उसे उड़ा ले जाती हैं। असत्य की तुलना भी झाग की ही तरह है।

[2]अर्थात पानी, तथा स्वर्ण, चाँदी, ताँबा, पीतल आदि ये चीजें शेष रहती हैं जिन से लोग लाभान्वित होते हैं। उसी प्रकार सत्य शेष रहता है जिसके अस्तित्व को भी विनाश नहीं तथा जिसका लाभ भी स्थाई है।

[3]अर्थात बात को समझाने तथा मस्तिष्क में रखने के लिये उपमायें तथा उदाहरणों का वर्णन होता है, जैसे यहाँ दो उदाहरण वर्णन किये गये तथा उसी प्रकार सूरः *अल-बकरः* के प्रारम्भ में पाखण्डियों के लिये उदाहरणों का वर्णन है। इसी प्रकार सूरः नूर-३९ तथा ४० में काफ़िरों के लिये दो उपमायें हैं तथा हदीसों में भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उदाहरणों के द्वारा लोगों को बहुत सी बातें समझायीं। (विस्तृत जानकारी के लिये देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

[4]यह विषय इससे पूर्व भी दो तीन स्थानों पर गुज़र चुका है।

[5]क्योंकि उनसे प्रत्येक छोटे-बड़े कर्मों का हिसाब लिया जायेगा तथा उनका मामला (जिससे हिसाब में प्रति प्रश्न की गयी उसका बच निकलना कठिन होगा, उसे दण्ड मिलकर ही रहेगा) का समतुल्य होगा। इसलिये आगे फ़रमाया उनका ठिकाना नरक है।

उनका ठिकाना नरक है, जो बहुत बुरा स्थान है।

(१९) क्या वह व्यक्ति जो यह ज्ञान रखता हो कि जो आपकी ओर आपके प्रभु की ओर से उतारा गया है, वह सत्य है, उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जो अंधा हो।[1] शिक्षा तो वही स्वीकार करते हैं, जो बुद्धिमान हों।[2]

أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰٓ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿١٩﴾

(२०) जो अल्लाह को दिये गये वचन को पूरा करते हैं।[3] तथा वचन भंग नहीं करते।[4]

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنقُضُونَ الْمِيثَاقَ ﴿٢٠﴾

(२१) तथा अल्लाह (तआला) ने जिन वस्तुओं को जोड़ने का आदेश दिया है, वह उसे जोड़ते हैं।[5] तथा वे अपने प्रभु से डरते हैं तथा हिसाब की कठोरता का डर रखते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَآ أَمَرَ اللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوٓءَ الْحِسَابِ ﴿٢١﴾

---

[1]अर्थात एक वह व्यक्ति जो क़ुरआन की यर्थातता तथा सत्यता पर विश्वास रखता हो, तथा दूसरा अंधा हो अर्थात उसे क़ुरआन की सत्यता पर संदेह हो, क्या ये दोनों समान हो सकते हैं ? प्रश्न, नकारात्मक है अर्थात ये दोनों उसी प्रकार समान नहीं हो सकते जिस प्रकार झाग तथा पानी अथवा स्वर्ण, ताँबा तथा उसकी मैल-कुचैल समान नहीं हो सकते।

[2]अर्थात जिसके पास स्वच्छ दिल तथा उचित बुद्धि न हो तथा जिन्होंने अपने दिलों को पापों का मुर्चा लगा रखा हो तथा अपनी बुद्धि भ्रष्ट कर ली हो, वह इस क़ुरआन से शिक्षा प्राप्त ही नहीं कर सकते।

[3]यह बुद्धिमानों के गुणों का वर्णन हो रहा है। अल्लाह के वचन से तात्पर्य, उसके आदेश (आज्ञा तथा निषेध) हैं, जिनका वे पालन करते हैं। अथवा वह वचन है, जो वचन عَهْدِ أَلَسْتُ कहलाता है, जिसका विस्तृत वर्णन *सूरः आराफ़* में आ चुका है।

[4]इससे तात्पर्य वह परस्पर संधि तथा वचन हैं, जो मनुष्य आपस में एक-दूसरे से करते हैं अथवा वह जो उनके तथा उनके प्रभु के मध्य हैं।

[5]अर्थात सम्बन्धों तथा नातों को तोड़ते नहीं अपितु उनको जोड़ते हैं तथा आपस में सम्बन्ध का पालन करते हैं।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَاۤءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰۤىِٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٢﴾

(२२) तथा वे अपने प्रभु की प्रसन्नता के लिये धैर्य रखते हैं ।[1] तथा नमाज़ों को निरन्तर स्थापित रखते हैं ।[2] तथा जो कुछ हमनें उन्हें दे रखा है उसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से ख़र्च करते हैं ।[3] तथा बुराई को भी भलाई से टालते हैं,[4] उन्हीं के लिये पारलौकिक निवास स्थान है ।[5]

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَاۤىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰۤىِٕكَةُ يَدْخُلُوْنَ

(२३) सदैव रहने के बाग़[6] जहाँ ये स्वयं जायेंगे तथा उनके पूर्वजों तथा पत्नियों एवं सन्तान में से भी जो पुण्य कार्य करने वाले

---

[1]अल्लाह की अवज्ञा तथा पापों से बचते हैं। यह धैर्य का एक प्रकार है। कठिनाईयों एवं दुखों में धैर्य रखते हैं। यह दूसरा प्रकार है।

[2]उनकी सीमाओं तथा प्रतिबन्ध, मन तथा चित्त से लीन एवं निर्धारित नियमानुसार।

[3]अर्थात जहाँ-जहाँ जब-जब व्यय करने की आवश्यकता पड़ती है, अपनों तथा बेगानों में तथा छिपाकर एवं प्रत्यक्ष रूप से व्यय करते हैं।

[4]अर्थात उनके साथ कोई बुराई करता है, तो वे उसका उत्तर अच्छाई से देते हैं, अथवा क्षमा तथा भुला देने एवं अत्यन्त सहनशीलता से काम लेते हैं। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴾

"बुराई का उत्तर इस प्रकार दो जो अच्छा हो (यदि तुम ऐसा करोगे) तो वह व्यक्ति जो तुम्हारा शत्रु है, ऐसा हो जायेगा जैसे कि तुम्हारा घनिष्ठ मित्र है।" (*सूरः हा॰मीम॰सजदः-३४*)

[5]अर्थात जो इन उत्तम चरित्रों का पालन करने तथा वर्णित विशेषताओं से युक्त होंगे, उनके लिये परलोक में घर है।

[6]अदन का अर्थ है स्थायी अर्थात सदैव रहने वाले बाग़।

عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾

होंगे,[1] उनके निकट फ़रिश्ते प्रत्येक द्वार से आयेंगे।

سَلَٰمٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى ٱلدَّارِ ﴿٢٤﴾

(२४) (कहेंगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो, धैर्य के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस पारलौकिक घर का।

وَٱلَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ ٱللَّهِ مِنۢ بَعْدِ مِيثَٰقِهِۦ وَيَقْطَعُونَ مَآ أَمَرَ ٱللَّهُ بِهِۦٓ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِى ٱلْأَرْضِ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوٓءُ ٱلدَّارِ ﴿٢٥﴾

(२५) तथा जो लोग अल्लाह के वचन को उस की सुदृढ़ता के पश्चात तोड़ देते हैं तथा जिन वस्तुओं के जोड़ने का अल्लाह का आदेश है उन्हें तोड़ देते हैं, तथा धरती में उपद्रव फैलाते हैं, उन के लिए धिक्कार है तथा उन के लिए बुरा घर है।[2]

---

[1]अर्थात इस प्रकार सद्व्यवहार सम्बन्धियों को आपस में एकत्रित कर देगा, ताकि एक-दूसरे का दर्शन करके नेत्र शीतलता प्राप्त हो, यहाँ तक कि नीच श्रेणी के स्वर्गवासी को भी उच्च श्रेणी प्रदान कर देगा ताकि वे अपने सम्बन्धियों के साथ एकत्रित हो जाये, कहा।

﴿وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ﴾

"तथा वे लोग जो ईमान लाये तथा उनकी सन्तान ने ईमान के साथ उनका अनुसरण किया तो हम मिला देंगे उनके साथ उनकी संतान को तथा उनके कर्मों से हम कुछ घटायेंगे नहीं।" (*सूरः अल-तूर-२१*)

इससे जहाँ यह ज्ञात होता है कि चरित्रवान सम्बन्धियों को अल्लाह तआला, स्वर्ग में एकत्रित करेगा, वहीं यह भी ज्ञात हुआ कि यदि किसी के पास ईमान तथा सत्कर्म की पूँजी नहीं होगी, तो वह स्वर्ग में नहीं जायेगा, चाहे उसके अन्य अति निकट सम्बन्धी स्वर्ग में चले गये हों। क्योंकि स्वर्ग में प्रवेश वंश तथा परिवार के आधार पर नहीं, ईमान तथा कर्म के आधार पर होगा।

«مَنْ بَطَّأَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يُسْرِعْ بِهِ نَسَبُهُ».

"जिसे उसका कर्म पीछे छोड़ गया, उसका वंश उसे आगे नहीं बढ़ायेगा।"(सहीह मुस्लिम किताबुल ज़िक्र वदआ, ब्राब फ़ज़लिल इज़्तेमाअे अला तिलावतिल क़ुरआन)

[2]यह सत्कर्मियों के साथ कुकर्मियों के परिणाम का वर्णन कर दिया ताकि मनुष्य इस परिणाम से बचने का प्रयत्न करे।

(२६) अल्लाह (तआला) जिसकी जीविका चाहता है बढ़ाता है तथा घटाता है।[1] ये तो दुनिया के जीवन में मुग्ध हो गये।[2] यद्यपि कि दुनिया परलोक की तुलना में अत्यधिक तुच्छ पूँजी है।[3]

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ ﴿۲۶﴾

(२७) काफ़िर कहते हैं कि उस पर कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी ? उत्तर दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे कर देता है तथा जो उसकी ओर झुके उसे मार्ग दिखा देता है।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ ﴿ۖ۲۷﴾

---

[1]जब काफ़िरों तथा मूर्तिपूजकों के लिये यह कहा कि उनके लिए बुरा घर है तो मन में यह संदेह उत्पन्न हो सकता है कि संसार में तो उन्हें हर प्रकार का सुख प्राप्त है। उसके खण्डन के लिये कहा कि सांसारिक साधन तथा व्यवसाय की कमी अथवा अधिकता यह अल्लाह के अधिकार में है वह अपनी इच्छा से तथा किसी कारणवश (जिसको केवल वही जानता है) किसी को अधिक तथा किसी को कम देता है। जीविका की अधिकता, इस बात का प्रमाण नहीं कि अल्लाह तआला उससे प्रसन्न है तथा कमी का अर्थ यह नहीं कि अल्लाह तआला उस पर क्रोधित है।

[2]किसी को यदि दुनिया का धन अधिक मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का अवज्ञाकारी है, तो यह प्रसन्न तथा निश्चिन्त होने का स्थान नहीं, क्योंकि यह अवसर है। पता नहीं कब यह अवधि समाप्त हो जाये तथा अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये।

[3]हदीस में आता है कि दुनिया का मूल्य परलोक की अपेक्षा इस प्रकार है, जैसे कोई व्यक्ति अपनी उंगली समुद्र में डिबो कर निकाले, तो देखे कि समुद्र के जल की अपेक्षा उसकी उंगली में कितना पानी आया ? (सहीह मुस्लिम किताबुलजन्नः, बाबु फ़नाइद्दुनिया व बयानुल हश्र यौमल क़ियामः) एक अन्य हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र बकरी के एक मरे बच्चे के पास से हुआ, तो उसे देखकर आप ने फ़रमाया :

"अल्लाह की सौगन्ध, संसार अल्लाह के निकट इससे भी अधिक तुच्छ है जितना यह मरा बच्चा अपने स्वामियों के निकट उस समय तुच्छ था, जब उन्होंने उसे फेंका।" (सहीह मुस्लिम किताबुज्ज़ुहदे वर्रक़ाक़)

(२८) जो लोग ईमान लाये उनके हृदय अल्लाह को स्मरण करने से शान्ति प्राप्त करते हैं। याद रखो कि अल्लाह के स्मरण से ही हृदय को शान्ति प्राप्त होती है।[1]

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ ٱللَّهِ ۗ أَلَا بِذِكْرِ ٱللَّهِ تَطْمَئِنُّ ٱلْقُلُوبُ ﴿٢٨﴾

(२९) जो लोग ईमान लाये तथा जिन्होंने पुण्य के कार्य भी किये उनके लिये खुशहाली है।[2] तथा सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَـَٔابٍ ﴿٢٩﴾

(३०) उसी प्रकार हमने आपको उस समुदाय में भेजा है,[3] जिससे पूर्व बहुत से समुदाय गुज़र चुके हैं कि आप उन्हें हमारी ओर से जो वह्यी (प्रकाशना) आप पर उतरी है, पढ़कर सुनाइए, यह अल्लाह कृपालु के नकारने वाले हैं।[4] (आप) कह दीजिये कि मेरा प्रभु तो वही

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَٰكَ فِىٓ أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَآ أُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۟ عَلَيْهِمُ ٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِٱلرَّحْمَٰنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّى لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

---

[1]अल्लाह के वर्णन से तात्पर्य उसके एकेश्वरवाद का वर्णन है, जिससे मूर्तिपूजकों के दिलों में संकोच उत्पन्न हो जाता है, अथवा उसकी इबादत, क़ुरआन पढ़ना, ऐच्छिक प्रार्थनायें, विनती तथा ध्यान लगाना है, जो ईमानवालों के दिलों का भोजन है अथवा उसके आदेशों एवं निर्देशों का अनुगमन तथा पालन करना है, जिसके बिना ईमानवाले तथा अल्लाह से डरने वाले बेक़रार रहते हैं।

[2] طُوبَىٰ के विभिन्न अर्थ बताये गये हैं। जैसे पुण्य, पवित्र, चमत्कार, प्रतिस्पर्धा, स्वर्ग में विशेष वृक्ष अथवा निर्धारित स्थान आदि। भावार्थ सभी का एक है अर्थात स्वर्ग में उत्तम स्थान तथा उसकी सुख-सुविधा।

[3]जिस प्रकार हमने आपको सचेत करने वाले रसूल के रूप में भेजा है, उसी प्रकार आप से पूर्व के समुदायों में रसूल भेजे थे, उनको भी इसी प्रकार झुठलाया गया था जिस प्रकार आपको किया गया तथा जिस प्रकार झुठलाने के परिणाम स्वरूप वे समुदाय नाश कर दिये गये, इन्हें भी उस परिणाम से निश्चिन्त नहीं रहना चाहिये।

[4]मक्का के मूर्तिपूजक '*रहमान*' (कृपानिधि) शब्द से बहुत भड़कते थे, *हुदैबिया* की संधि के अवसर पर जब *बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम* के शब्द लिखे गये, तो उन्होंने कहा कि '*रहमान*' (कृपानिधि) तथा *रहीम* (दयालु) क्या है ? हम नहीं जानते। (इब्ने कसीर)

وَإِلَيْهِ مَتَابِ ۝٣٠

है, उसके अतिरिक्त वस्तुतः कोई भी इबादत के योग्य नहीं,[1] उसी के ऊपर मेरा भरोसा है। तथा उसी की ओर मेरा आकर्षण है।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَىٰ ۗ بَل لِّلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۗ أَفَلَمْ يَيْأَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا ۗ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝٣١

(३१) तथा यदि (मान लिया जाये कि) क़ुरआन के द्वारा पर्वत चला दिये जाते अथवा धरती खन्ड-खन्ड कर दी जाती अथवा मृतकों से बाते करा दी जातीं (फिर भी वह ईमान न लाते) बात यह है कि सब कार्य अल्लाह के हाथ में है।[2] तो क्या ईमान वालों का इस बात पर दिल नहीं जमता कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो सभी लोगों को मार्गदर्शन दे दे। काफ़िर को तो उनके कुफ्र के बदले सदैव ही कोई न कोई कठोर यातना पहुँचती रहेगी अथवा उनके मकानों के आस-पास उतरती रहेगी [3]

---

[1]अर्थात रहमान मेरा वह प्रभु है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं।

[2]इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रत्येक आकाशीय पुस्तक को क़ुरआन कहा जाता है, जिस प्रकार एक हदीस में आता है कि आदरणीय दाऊद पशुओं को तैयार करने का आदेश देते तथा इतनी देर में एक बार क़ुरआन पढ़ लेते (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया) यहाँ स्पष्ट बात है कि क़ुरआन से तात्पर्य ज़बूर है। आयत का अर्थ यह है कि यदि पूर्व में कोई आकाशीय पुस्तक ऐसी अवतरित हुई होती जिसे सुनक़र पर्वत चलने लगते अथवा धरती की दूरी तय हो जाती अथवा मरे हुए लोग बोल उठते तो क़ुरआन करीम में यह विशेषता इससे भी उत्तम रूप में विद्यमान होती क्योंकि यह चमत्कार तथा भाषा शैली में पूर्व की सभी पुस्तकों से उच्च है। तथा कुछ ने इसका भावार्थ यह वर्णन किया है कि यदि इस क़ुरआन के द्वारा यह चमत्कार प्रकट होते, तब भी ये काफ़िर ईमान न लाते, क्योंकि ईमान लाना अथवा न लाना यह अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है, चमत्कारों पर नहीं। इसीलिये फ़रमाया सभी कार्य अल्लाह के हाथ में है।

[3]जो उनके देखने अथवा ज्ञान में अवश्य आयेगी ताकि वह शिक्षा ग्रहण कर सकें।

यहाँ तक कि अल्लाह का वचन आ पहुँचे ।[1] नि:संदेह अल्लाह तआला वचन भंग नही करता ।

(३२) तथा नि:संदेह आप से पूर्व के पैग़म्बरों के साथ उपहास किया गया था तथा मैंने भी क़ाफ़िरों को ढील दी थी फिर उन्हें पकड़ लिया था, तो मेरा प्रकोप कैसा रहा ?[2]

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٣٢﴾

(३३) अथवा वह अल्लाह जो ख़बर लेने वाला है प्रत्येक व्यक्ति का उसके किये हुए कर्म पर[3] उन लोगों ने अल्लाह के साझीदार ठहराये हैं, कह दीजिये तनिक उनके नाम तो लो,[4] क्या

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۗ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ

[1]अथवा क़ियामत (प्रलय) आ जाये अथवा मुसलमानों को पूर्ण विजय तथा अधिकार प्राप्त हो जाये ।

[2]हदीस में आता है ।

« إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ »

"अल्लाह तआला अत्याचारियों को अवसर दिये जाता है, यहाँ तक कि जब उसे पकड़ता है तो फिर छोड़ता नहीं ।"

इसके पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह क़ुरआन की आयत पढ़ी ।

﴿ وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾ ﴾

"इसी प्रकार तेरे प्रभु की पकड़ है जब वह अत्याचार करने वाली बस्तियों को पकड़ता है । नि:संदेह उसकी पकड़ अत्यन्त कड़ी एवं कठोर है ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: हूद तथा सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे, बाब तहरिमिज्ज़ुलम)

[3]यहाँ इसका उत्तर लिप्त है । अर्थात क्या वह इन झूठे देवताओं के समान हो सकता है, जिनकी ये पूजा करते हैं, जो किसी को लाभ पहुँचाने अथवा न हानि पहुँचाने की शक्ति रखते हैं, न वे देखते हैं तथा न वे बुद्धि तथा समझ रखते हैं ।

[4]अर्थात हमें भी बताओ कि उन्हें पहचान सकें इसलिये कि उनकी कोई वास्तविकता ही नहीं है । इसलिये आगे कहा । क्या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती में

فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो, जो वह धरती पर जानता ही नहीं, अथवा केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो,[1] बात वास्तविक यह है कि कुफ्र करने वालों के लिए उनके छल भले ही सुझाये गये हैं।[2] तथा वे सत्य मार्ग से रोक दिये गये हैं, तथा जिसे अल्लाह भटका दे उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं।[3]

जानता ही नहीं, अर्थात उनका अस्तित्व ही नहीं। इसलिये कि यदि धरती में उनका अस्तित्व होता तो अल्लाह तआला के ज्ञान में अवश्य होता, उससे कोई बात छिपी नहीं है।

[1]यहाँ ظاهر (जाहिर) कल्पना के अर्थ में है अर्थात यह केवल उनकी काल्पनिक बातें हैं। अर्थ यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस कल्पना से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुँचा सकती हैं तथा तुमने उनके नाम भी देवता रखे हुए हैं। यद्यपि ये नाम तुम्हारे तथा तुम्हारे पूर्वजों के रखे हुए हैं, जिनका कोई प्रमाण अल्लाह ने अवतरित नहीं किया। ये केवल कल्पना तथा मनमानी करते हैं। (सूर: *अल-नज्म*-२३)

[2]छल से तात्पर्य, उनके वे पथभ्रष्ट विश्वास का कर्म है, जिनमें शैतान ने उनको फंसा रखा है, शैतान ने पथभ्रष्टता पर भी आकर्षित आवरण चढ़ा रखा है।

[3]जिस प्रकार अन्य स्थान पर है।

﴿وَمَن يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا﴾

"जिस को अल्लाह भटकाने का विचार कर ले तो तू अल्लाह से, उसके लिये कुछ अधिकार नहीं रखता।" (सूर: *अल-मायद:*-४१)

तथा फरमाया :

﴿إِن تَحْرِصْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَن يُضِلُّ ۖ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ﴾

"यदि तुम उनके मार्गदर्शन की इच्छा रखते हो तो (याद रखो) अल्लाह तआला उसे मार्गदर्शन नहीं प्रदान करता जिसे वह पथ भ्रष्ट करता है तथा उनकी कोई सहायता नहीं होगी।" (सूर: *अल-नहल*-३७)

(३४) उनके लिये साँसारिक जीवन में भी दुख है ।[1] तथा आख़िरत (परलोक) की यातना तो अत्यधिक कठोर है ।[2] तथा उन्हें अल्लाह के क्रोध से बचाने वाला कोई नहीं ।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿٣٤﴾

(३५) उस स्वर्ग की विशेषता जिसका वचन परहेज़गारों को दिया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं । उसके फल सदैव रहने वाले हैं तथा उसकी छाया भी । यह है प्रतिफल परहेज़गारों (जितेन्द्रियों) का,[3] तथा काफ़िरों का परिणाम नरक है ।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۭ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ڰ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿٣٥﴾

(३६) तथा जिन्हें हमने किताब प्रदान की है,[4] वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है, उस

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ

---

[1]इससे तात्पर्य हत्या तथा बन्दी बनाना है जो मुसलमानों के साथ युद्ध में उन काफ़िरों के भाग में आती है ।

[2]जिस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी لِعَان करने वाले जोड़े से कहा था ।

«إِنَّ عَذَابَ الدُّنْيَا أَهْوَنُ مِنْ عَذَابِ الآخِرَةِ».

"साँसारिक यातना परलोक की यातना से अत्यधिक सहज है ।"(सहीह मुस्लिम किताबुल लेआन)

इसके अतिरिक्त साँसारिक यातना (जैसा कुछ तथा जितनी कुछ भी हो) अस्थाई तथा साम्यिक है तथा परलोक की यातना स्थाई है, उसमें कमी अथवा अन्त नहीं । इसके अतिरिक्त नरक की अग्नि साँसारिक अग्नि से उन्हत्तर गुना अधिक गर्म है । तथा इसी प्रकार अन्य वस्तुऐं हैं । इसलिये यातना की तीव्रता में क्या सन्देह हो सकता है ।

[3]काफ़िरों के दुष्परिणाम के उपरान्त ईमानवालों के अति उत्तम परिणाम का भी वर्णन कर दिया गया ताकि स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अभिलाषा तथा रूचि उत्पन्न हो, इस स्थान पर इमाम इब्ने कसीर ने स्वर्ग की सुख-सुविधाओं तथा उनकी विशेष महत्ता पर आधारित हदीसों का वर्णन किया है, जिन्हें वहाँ देख लिया जाये ।

[4]इससे तात्पर्य मुसलमान हैं तथा अर्थ है जो क़ुरआन के आदेशानुसार कर्म करते हैं ।

مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَاۤ اُشْرِكَ بِهٖ ؕ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝

से प्रसन्न होते हैं[1] तथा अन्य सम्प्रदाय उस की कुछ बातों को अस्वीकार करते हैं ।[2] आप घोषणा कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ तथा उसके साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की ओर आमंत्रित कर रहा हूँ तथा उसी की ओर मेरा आकर्षित होना है ।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝

(३७) तथा इसी प्रकार हमने इस क़ुरआन को अरबी भाषा का आदेश उतारा है ।[3] तथा यदि आप ने उनकी इच्छाओं[4] का अनुगमण किया इसके उपरान्त की आप के पास ज्ञान आ चुका है[5] तो अल्लाह (की यातनाओं) से

---

[1]अर्थात क़ुरआन की सत्यता के प्रमाण तथा साक्ष्य देखकर और प्रसन्न होते हैं ।

[2]इससे तात्पर्य यहूदी, इसाई, काफ़िर तथा मूर्तिपूजक हैं । कुछ के निकट पुस्तक से तात्पर्य तौरात तथा इंजील है, इनमें से जो मुसलमान हुए, वे प्रसन्न होते हैं तथा अस्वीकार करने वाले वे यहूदी तथा इसाई हैं जो मुसलमान नहीं हुए ।

[3]अर्थात जिस प्रकार से आप के पूर्व के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा में पुस्तकें अवतरित की गयीं उसी प्रकार आप पर क़ुरआन हमने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आपके प्रथम सम्बोधित अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं । यदि यह क़ुरआन किसी अन्य भाषा में अवतरित होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने में इनके लिये बहाना हो जाता । हमनें क़ुरआन को अरबी भाषा में अवतरित करके यह बहाना भी दूर कर दिया ।

[4]इससे तात्पर्य अहले किताब की कुछ आकांक्षायें हैं जिनको वह चाहते थे कि अल्लाह के अन्तिम रसूल अपनायें जैसे बैतुल मोकद्दस को स्थाई "क़िबला" बनाये रखना तथा उनके अंधविश्वासों का विरोध न करना आदि ।

[5]इससे तात्पर्य वह ज्ञान है जो वह्‌यी (प्रकाशना) के द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया गया है, जिसमें अहले किताब के अंधविश्वासों की वास्तविकता भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रकट कर दी गयी ।

आपका न पक्षधर मिलेगा तथा न रक्षा करने वाला ।[1]

(३८) तथा हम आपसे पूर्व भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं तथा हमने उन सब को पत्नी तथा सन्तान वाला बनाया था ।[2] किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की आज्ञा के ले आये ।[3] हर निर्धारित वचन की एक लिखित है ।[4]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۗ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ﴿٣٨﴾

---

[1]यह वास्तव में मुसलमानों के धार्मिक ज्ञान रखने वालों को चेतावनी है कि वे संसार के अस्थाई लाभ के लिये कुरआन तथा हदीस के स्पष्ट आदेशों की तुलना में लोगों की भावनाओं के पीछे न लगें, यदि वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह की यातना से बचाने वाला कोई नहीं होगा ।

[2]अर्थात आप सहित जितने भी रसूल तथा नबी आये, सभी मानव पुरूष थे, जिनका परिवार तथा वंश था तथा पत्नी एवं सन्तान थी, वे फ़रिश्ते न थे तथा न मनुष्य के रूप में कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि थे । अपितु मनुष्य की श्रेणी से ही थे । क्योंकि यदि फ़रिश्ते होते तो मनुष्य के लिये उनसे निकट होना तथा लगाव रख पाना संभव नही था । जिससे उनके भेजने का मुख्य उद्देश्य ही समाप्त हो जाता तथा यदि वे फ़रिश्ते मनुष्य के रूप में होते, तो संसार में उनका न परिवार तथा वंश होता तथा न उनकी पत्नी तथा सन्तान होती । जिससे ज्ञात होता है कि सभी नबी श्रेणी के आधार पर मनुष्य ही थे, मनुष्य के रूप में फ़रिश्ते अथवा कोई ज्योति से उत्पन्न सृष्टि नहीं थे ।

[3]अर्थात चमत्कार को प्रदर्शित करना रसूलों के वश में नहीं है कि जब उनसे माँग की जाये तो वह उसको प्रदर्शित कर दें । अपितु पूर्णतः अल्लाह ही के वश में है, वह अपनी इच्छा तथा ज्ञान के अनुसार निर्णय करता है कि चमत्कार की आवश्यकता है अथवा नहीं ? तथा यदि है तो किस प्रकार दिखाया जाये ?

[4]अर्थात अल्लाह तआला ने जिस बात का भी वायदा किया है, उसका एक समय निर्धारित है, उस निर्धारित समय पर वह अवश्य व्यक्त होगा, क्योंकि अल्लाह का वचन भंग नही होता । तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि वाक्य में प्रथम अर्थ को बाद में कर दिया गया है । मूल वाक्य لِكُل كتاب أجـل है । तथा अर्थ है कि प्रत्येक विषय, जिसे अल्लाह ने लिख रखा है, उसका एक निर्धारित समय है । अर्थात मामला काफ़िर की इच्छा तथा आकांक्षा पर नहीं बल्कि केवल अल्लाह की इच्छा पर निर्भर है ।

(३९) अल्लाह जो चाहे निरस्त कर दे तथा जो चाहे सुरक्षित रखे, सुरक्षित पुस्तक (लौहे महफ़ूज़) उसी के पास है ।[1]

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاۤءُ وَيُثْبِتُ ۚ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿٣٩﴾

(४०) तथा उन से किये हुए वचनों में से कोई यदि हम आपको दिखा दें अथवा आपको

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا

---

[1]इसका एक अर्थ तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे निरस्त कर दे तथा जिसे चाहे शेष रखे । दूसरा अर्थ यह कि उसने जो भाग्य में लिख रखा है, उसमें वह परिवर्तन करता रहता है, उसके पास सुरक्षित पुस्तक है जिसकी पुष्टि कुछ हदीसों से होती है । जैसे एक हदीस में आता है कि

"मनुष्य पापों के कारण जीविका से वंचित कर दिया जाता है, प्रार्थना से भाग्य बदल जाता है तथा संबन्धियों के साथ सदभाव से आयु में वृद्धि होती है ।" (मुसनद अहमद भाग ५ पृष्ठ २७७)

कुछ सहाबियों (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों) से यह प्रार्थना उदघृत है ।

«اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا أَشْقِيَاءَ فَامْحُنَا وَاكْتُبْنَا سُعَدَاءَ، وَإِنْ كُنْتَ كَتَبْتَنَا سُعَدَاءَ فَأَثْبِتْنَا، فَإِنَّكَ تَمْحُو مَا تَشَاءُ وَتُثْبِتُ وَعِنْدَكَ أُمُّ الْكِتَابِ».

आदरणीय उमर से सम्बन्धित यह कथन है कि काबा की परिक्रमा के समय रोते हुए यह दुआ पढ़ते । (इब्ने कसीर)

"ऐ अल्लाह ! यदि तूने मुझ पर दुर्भाग्य तथा पाप लिख दिया है तो उसे मिटा दे, इसलिये कि तू जो चाहे मिटा दे तथा जो चाहे शेष रखे, तेरे पास ही सुरक्षित पुस्तक है, बस तू दुर्भाग्य को सौभाग्य में तथा क्षमा में बदल दे ।"

इस भाव पर यह आलोचना हो सकती है कि हदीस में तो यह आता है ।

«جَفَّ الْقَلَمُ بما هُوَ كَائِنٌ».

"जो कुछ होने वाला है, क़लम उसे लिखकर सूख चुका है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या ५०७६)

इसका उत्तर यह है कि उसका यह परिवर्तन भी भाग्य में लिखे हुए निर्णय के आधार पर है । (फ़तहुल क़दीर)

عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝٤٠

हम मृत्यु प्रदान कर दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है। हिसाब तो हमें लेना है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝٤١

(४१) क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उसके किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ?[1] अल्लाह आदेश करता है तथा कोई उसके आदेश को पीछे डालने वाला नहीं,[2] वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفَّارُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۝٤٢

(४२) तथा उनसे पूर्व के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी परन्तु सभी व्यवस्था अल्लाह ही की हैं,[3] जो व्यक्ति कुछ कर रहा है अल्लाह के ज्ञान में है।[4] काफ़िरों को अभी ज्ञात हो जायेगा कि उस लोक (परलोक) का बदला किस के लिये है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي

(४३) तथा यह काफ़िर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) उत्तर दीजिये कि मुझ में तथा तुम में अल्लाह गवाही देने

---

[1]अर्थात अरब की धरती मूर्तिपूजकों के लिये क्षण-क्षण संकुचित हो रही है तथा इस्लाम का प्रभाव तथा उत्थान हो रहा है।

[2] अर्थात कोई भी अल्लाह के आदेशों को रद नहीं कर सकता।

[3]अर्थात मक्का के मूर्तिपूजकों से पूर्व भी लोग रसूलों के साथ छल-कपट करते रहे हैं, परन्तु अल्लाह की योजना के आगे उनका कोई छल तथा कपट सफल नहीं हो पाया, उसी प्रकार भविष्य में भी उनका कोई छल तथा कपट अल्लाह की योजनाओं के समक्ष सफल नहीं होगा।

[4]वह उसके अनुसार प्रत्युपकार तथा दण्ड देगा, अच्छे कर्म करने वालों को उसका अच्छा बदला तथा कुकर्मियों को उनके कुकर्मों का दण्ड।

وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتٰبِ ﴿٤٣﴾

वाला पर्याप्त है ।[1] तथा वह जिसके पास किताब का ज्ञान है ।[2]

सूरतु इब्राहीम-१४

سُورَةُ ابْرَاهِيمَ

सूरः *इब्राहीम* मक्का में उतरी तथा इसकी बावन आयतें हैं तथा सात रुकूअ हैं ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ ।

الٓرٰ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰ यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक हमने आपकी ओर उतारी है कि आप लोगों को अंधकार से प्रकाश की ओर लायें[3] उनके

---

[1]अतः वह जानता है कि मैं उसका सच्चा रसूल तथा उसके संदेश का आमन्त्रण देने वाला हूँ तथा तुम झूठे हो ।

[2] किताब से तात्पर्य वास्तविक पुस्तक है तथा तात्पर्य तौरात तथा इंजील का ज्ञान है । अर्थात अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फ़ारसी तथा तमीम दारी इत्यादि अर्थात यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ । अरब के मूर्तिपूजक विशेष समस्याओं में अहले किताब से मंत्रणा करते तथा उनसे पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको मार्गदर्शन प्रदान किया कि अहले किताब जानते हैं, उनसे तुम पूछ लो । कुछ विद्वान कहते हैं कि किताब से तात्पर्य क़ुरआन है तथा किताब का ज्ञान रखने वाले मुसलमान हैं । तथा कुछ विद्वानों ने किताब से तात्पर्य सुरक्षित पुस्तक लिया है । अर्थात जिसके पास सुरक्षित पुस्तक का ज्ञान है अर्थात अल्लाह तआला । परन्तु प्रथम भावार्थ अधिक उपयुक्त है ।

[3] जिस प्रकार अन्य स्थान पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ﴾

"वही शक्ति जो अपने भक्ति पर स्पष्ट निशानियाँ अवतरित करती है ताकि वह तुम्हें अंधेरों से प्रकाश की ओर निकाल लाये ।" (सूरः *अल-हदीद-९*)

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

प्रभु के आदेश से,[1] शक्तिमान प्रशंसित अल्लाह के मार्ग की ओर।

اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ②

(२) जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों तथा धरती में है। तथा काफ़िरों (कृतघ्नों) के लिये घोर यातना की विपत्ति है।

الَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ③

(३) जो आख़िरत (परलोक) की तुलना में सांसारिक जीवन का मोह करते हैं तथा अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं तथा उसमें टेढ़ापन उत्पन्न करना चाहते हैं।[2] यही लोग परले दर्जे की गुमराही (पथभ्रष्टता) में हैं।[3]

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۖ فَيُضِلُّ

(४) तथा हमने प्रत्येक नबी (संदेशवाहक) को उसकी सामुदायिक (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उनके समक्ष स्पष्टरूप से वर्णन कर

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ﴾

"अल्लाह तआला ईमानवालों का मित्र है, वह उन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश की ओर लाता है।" (*सूरः अल-बकरः-२५७*)

[1]अर्थात पैग़म्बर (ईशदूत) का कार्य प्रकाश का मार्ग दिखाना है, यदि कोई उसे अपना लेता है, तो यह केवल अल्लाह के आदेश तथा इच्छा से होता है क्योंकि मूल मार्गदर्शक वही है। उसकी इच्छा यदि न हो तो पैग़म्बर चाहे जितनी शिक्षा-दीक्षा दे, लोग प्रकाश का मार्ग अपनाने के लिए तैयार नहीं होते, जिसके कई उदाहरण पूर्व के नबियों में हैं तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तीब्र इच्छा के उपरान्त अपने प्रिय चाचा अबू तालिब को मुसलमान न कर सके।

[2]इसका एक अर्थ तो यह हुआ कि इस्लाम की शिक्षाओं में लोगों में बुरी धारणा उत्पन्न करने के लिये त्रुटियाँ निकालने का प्रयत्न करते हैं तथा उसे कुरूप बनाकर प्रस्तुत करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि अपनी आकांक्षाओं के अनुसार इसमें परिवर्तन करना चाहते हैं।

[3]इसलिये कि उनमें वर्णित विभिन्न दोष एकत्रित हो गये हैं। जैसे परलोक की अपेक्षा दुनिया को महत्व देना, अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकना तथा इस्लाम धर्म में त्रुटि खोजना।

دे ।[1] अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, तथा जिसे चाहे मार्ग दिखा दे, वह प्रभावशाली तथा विज्ञानी है ।[2]

اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

(५) (याद करो जब कि) हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तू अपने समुदाय को अंधकार से प्रकाश में निकाल,[3] तथा उन्हें अल्लाह के उपकार याद दिला ।[4] इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक धैर्यवान के लिये ।[5]

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝

---

[1]फिर जब अल्लाह तआला ने दुनिया वालों पर यह उपकार किया कि उनके मार्गदर्शन के लिए किताबें अवतरित कीं तथा रसूल भेजे, तो इस उपकार को इस प्रकार पूर्ण किया कि प्रत्येक रसूल को सामुदायिक (जातीय) भाषा में भेजा ताकि किसी को प्रकाश के मार्ग को समझने में कठिनाई न हो ।

[2]परन्तु इस वर्णन तथा व्याख्या के उपरान्त मार्गदर्शन उसी को प्राप्त होगा जिसको अल्लाह चाहे ।

[3]अर्थात जिस प्रकार हे मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हमने आपको अपने समुदाय की ओर भेजा तथा किताब अवतरित की, ताकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने समुदाय को कुफ्र तथा मूर्तिपूजा के अंधकार से निकाल कर ईमान के प्रकाश की ओर लायें, उसी प्रकार मूसा को भी हमने चमत्कार तथा तर्क प्रदान करके उनके समुदाय की ओर भेजा ताकि वह उन्हें कुफ्र तथा अज्ञान के अंधकार से निकालकर ईमान का प्रकाश प्रदान करें । "*आयात*" से तात्पर्य चमत्कार हैं जो मूसा अलैहिस्सलाम को प्रदान किये गये थे अथवा वे नौ चमत्कार जिनका वर्णन *सूरः बनी इस्राईल* में किया गया है ।

[4] أَيَّامُ اللهِ से तात्पर्य अल्लाह के वे उपकार हैं जो इस्राईल की संतान पर किये गये जिनका विस्तृत वर्णन पूर्व में कई बार आ चुका है । अथवा وقائع ايام घटनाओं के अर्थ में है अर्थात वे घटनायें उनको याद दिला जिनसे ये गुज़र चुके हैं, जिनमें अल्लाह तआला के विशेष उपकार हुए जिनमें से कुछ का वर्णन यहाँ पर आ रहा है ।

[5]धैर्य तथा कृतज्ञता ये दो प्रमुख गुण हैं तथा ईमान का आधार इन्ही पर है । इसलिये यहाँ पर इन दो का वर्णन किया गया है दोनों अतिश्योक्ति के रूप में हैं । صَبّار अत्यधिक धैर्य रखने वाला, شكور अत्यधिक कृतज्ञता प्रकट करने वाला । तथा धैर्य को कृतज्ञता के पहले रखा गया है । इसलिये कि شكر (कृतज्ञता) धैर्य का ही फल है । हदीस में

(६) तथा जिस समय मूसा ने अपने समुदाय से कहा कि अल्लाह के वे उपकार याद करो जो उसने तुम पर किये हैं, जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन के साथियों से मुक्त किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे। तुम्हारे पुत्रों की हत्या करते थे तथा तुम्हारी पुत्रियों को जीवित छोड़ते थे, इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से तुम पर बड़ा उपकार था।[1]

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۚ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿٦﴾

(७) तथा जब तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें सावधान कर दिया,[2] कि यदि तुम कृतज्ञता व्यक्त करोगे तो निःसंदेह मैं तुम्हें अधिक प्रदान करूँगा।[3] तथा यदि तुम कृतघ्न होगे, तो निश्चय मेरा प्रकोप कठोर है।[4]

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ ۖ وَلَئِن كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ﴿٧﴾

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "मोमिन का मामला भी विचित्र है। अल्लाह तआला इसके लिये जिस बात का भी निर्णय कर ले, वह उसके पक्ष में अच्छा होता है, यदि उसे दुख पहुँचे तथा वह धैर्य रखे तो यह भी उसके पक्ष में श्रेष्ठ है तथा यदि उसे कोई प्रसन्नता प्राप्त हो, वह उस पर अल्लाह का आभारी हो तो यह भी उसके पक्ष में उत्तम है।" (सहीह मुस्लिम किताबुल ज़ोहद बाब "अल-मोमिन अम्रोहु कुल्लहु ख़ैर ")

[1]अर्थात जिस प्रकार यह बहुत बड़ी परीक्षा थी, उससे मुक्ति अल्लाह का बहुत बड़ा उपकार था। इसीलिये कुछ अनुवादकों ने بلاء का अनुवाद परीक्षा तथा कुछ ने उपकार किया है।

[2] تـأذن का अर्थ أعلمكم بوعده لكم उसने अपने वायदे के साथ तुम्हें सर्तक तथा सचेत कर दिया है। तथा यह भी सम्भव है कि यह सौगन्ध के अर्थ में हो अर्थात जब तुम्हारे प्रभु ने अपनी मान-मर्यादा तथा महिमा की सौगन्ध खाकर कहा। (इब्ने कसीर)

[3]अल्लाह की कृपा पर कृतज्ञ होने पर और अधिक कृपाएं प्रदान करता है।

[4]इसका अर्थ यह हुआ कि कृतघ्नता अल्लाह को अत्यधिक अप्रिय है, जिस पर उसने कठोर (कड़ी) यातना की चेतावनी दी है। इसलिये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी

وَقَالَ مُوسَىٰ إِن تَكْفُرُوا أَنتُمْ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ⑧

(८) तथा मूसा ने कहा कि यदि तुम सब तथा धरती पर निवास करने वाले सभी लोग अल्लाह की कृतघ्नता करें, तो भी अल्लाह महान तथा प्रशंसा वाला है ।[1]

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ

(९) क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पूर्व के लोगों के समाचार नहीं आये ? अर्थात नूह के समुदाय का एवं आद तथा समूद का, तथा

फ़रमाया कि स्त्रियों की बहुमत अपने पतियों की कृतघ्नता के कारण नरक में जायेंगी । (मुस्लिम, किताबु सलातिल ईदैन का आरम्भ)

[1]अभिप्राय यह है कि मनुष्य अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करेगा तो उसमें उसी का लाभ है । कृतघ्नता व्यक्त करेगा तो अल्लाह की उसमें क्या हानि है ? वह तो निस्पृह है । अखिल जगत उसका कृतघ्न हो जाये तो उसका क्या बिगड़ेगा ? जिस प्रकार हदीस कुदसी में आता है अल्लाह तआला फ़रमाता है :

«يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ، كَانُوا عَلَىٰ أَتْقَىٰ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنكُمْ، مَازَادَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ كَانُوا عَلَىٰ أَفْجَرِ قَلْبِ رَجُلٍ مِّنكُمْ مَا نَقَصَ ذٰلِكَ فِي مُلْكِي شَيْئًا، يَاعِبَادِي! لَوْ أَنَّ أَوَّلَكُمْ وَآخِرَكُمْ، وَإِنْسَكُمْ وَجِنَّكُمْ قَامُوا فِي صَعِيدٍ وَاحِدٍ، فَسَأَلُونِي فَأَعْطَيْتُ كُلَّ إِنْسَانٍ مَسْأَلَتَهُ، مَا نَقَصَ ذٰلِكَ مِنْ مُلْكِي شيئًا، إِلَّا كَمَا يُنقِصُ الْمِخْيَطُ إِذَا أُدْخِلَ فِي الْبَحْرِ».

"हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त एवं उसी प्रकार सभी मनुष्य तथा जिन्न उस एक मनुष्य के दिल के भाँति हो जायें जो तुममें से अधिक अल्लाह से डरने वाला तथा परहेज़गार हो (अर्थात कोई भी अवहेलना करने वाला न हो) तो उससे मेरे राज्य में विस्तार न होगा । ऐ मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न उस एक मनुष्य के दिल की भाँति हो जायें जो तुममें सबसे बड़ा अवज्ञाकारी तथा कुकर्मी हो तो उससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी । हे मेरे भक्तो ! यदि तुम्हारे आदि तथा अन्त तथा मनुष्य एवं जिन्न सभी एक मैदान में एकत्रित हो जायें तथा मुझसे प्रश्न करें, तथा मैं प्रत्येक व्यक्ति को उसके प्रश्न के अनुसार प्रदान कर दूँ तो उससे मेरे कोष में तथा राज्य में इतनी ही कमी होगी जितनी सुई को समुद्र में डुबोने पर निकालने से समुद्र के जल में होती है ।" فَسُبْحَانَه و تعالى الغني الحميد (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे बाब तहरीमिज़ ज़ुल्मे)

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ۭ جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فِيْٓ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ⑨

उनके पश्चात वालों का जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता, उनके पास उनके रसूल चमत्कार लाये, परन्तु वे अपने हाथ अपने मुख में फेर ले गये [1] तथा स्पष्ट रूप से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नही मानते हैं तथा जिस चीज़ की ओर तुम हमें आमन्त्रित कर रहे हो हमें तो उसमें बहुत बड़ी शंका है (हमें विश्वास नहीं) ।[2]

قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ

(१०) उनके रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सत्य है) उसके विषय में संदेह है, जो आकाशों तथा धरती का उत्पन्न करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे पाप क्षमा कर दे,[3]

---

[1]व्याख्याकारों ने इसके विभिन्न अर्थों का वर्णन किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में रख लिये तथा कहा कि हमारा तो केवल एक ही उत्तर है कि हम तुम्हारी रिसालत को अस्वीकार करते हैं। २- उन्हें अपनी उंगलियों से अपने मुख की ओर संकेत कर के कहा कि सावधान रहो तथा ये जो संदेश लेकर आये हैं उन की ओर आकर्षित न हो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुँह पर उपहास तथा आश्चर्य से रख लिये जिस प्रकार से एक व्यक्ति हँसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुख पर रख कर कहा चुप रहो। ५- क्रोध तथा जलन के कारण अपने हाथ अपने मुख में ले लिये। जिस प्रकार पाखण्डियों के विषय में अन्य स्थान पर आता है।

﴿ عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ﴾

"वह तुम पर उँगलियाँ क्रोध तथा जलन से काटते हैं।" (*सूरः आले इमरान*-११९)

इमाम शौकानी तथा तबरी ने इसी अन्तिम अर्थ को प्राथमिकता प्रदान की है।

[2] مريب अर्थात ऐसा संदेह कि जिससे मन अत्यधिक व्याकुलता तथा दुविधा में घिर जाये।

[3]अर्थात तुम्हें अल्लाह के विषय मे संदेह है जो आकाशों तथा धरती का रचयिता है। इसके अतिरिक्त वह ईमान तथा एकेश्वर की ओर आमन्त्रित भी केवल इसलिये कर रहा

إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ تُرِيدُونَ أَن تَصُدُّونَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتُونَا بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ⑩

तथा एक निर्धारित समय तक तुम्हें अवसर प्रदान करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही मनुष्य हो,[1] तुम चाहते हो कि हमको उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे पूर्वज करते रहे ।[2] अच्छा तो कोई हमारे समक्ष स्पष्ट युक्ति प्रस्तुत करो ।[3]

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِن نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَمَا كَانَ لَنَا أَن نَّأْتِيَكُم بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ

(११) उनके पैग़म्बरों ने उनसे कहा कि यह तो सत्य है कि हम तुम जैसे मनुष्य हैं । परन्तु अल्लाह (तआला) अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है ।[4] अल्लाह के आदेश के बिना हमारी शक्ति नहीं

है कि तुम्हें पाप से शुद्ध कर दे । इसके विपरीत भी तुम उस धरती व आकाश के स्रष्टा को मानने के लिये तैयार नहीं तथा उसके आमंत्रण से तुम्हें इंकार है ?

[1]ये वही संदेह है जो काफ़िरों को उत्पन्न होता रहा कि मनुष्य होकर किस प्रकार कोई अल्लाह की प्रकाशना (वह्यी) तथा नबूअत एवं रिसालत के योग्य हो सकता है ।

[2]यह दूसरी रूकावट (विघ्न) है कि हम उन देवताओं की उपासना किस प्रकार छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते आये हैं ? जबकि तुम्हारा उद्देश्य हमें उनकी उपासना से रोक कर एक ईश्वर की इबादत (वंदना) पर लगाना है ।

[3]निशानियाँ तथा चमत्कार प्रत्येक नबी के साथ होते थे, इससे तात्पर्य ऐसी युक्ति अथवा चमत्कार है, जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न प्रकार के चमत्कारों को दिखाने की माँग की थी, जिसका वर्णन *सूर: बनी इस्राईल* में आयेगा ।

[4]रसूलों ने पहले संदेहों का उत्तर दिया कि निःसंदेह हम तुम जैसे मनुष्य ही हैं । परन्तु तुम्हारा यह समझना त्रुटिपूर्ण है कि मनुष्य रसूल नहीं हो सकता । अल्लाह तआला मनुष्यों के मार्गदर्शन के लिये मनुष्यों में से ही कुछ मनुष्यों को प्रकाशना (वह्यी) तथा रिसालत के लिये चुन लेता है तथा तुम सभी में से यह उपकार अल्लाह ने हम पर किया है ।

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪

कि हम कोई चमत्कार तुम्हें ला दिखायें ।[1] तथा ईमानदारों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये ।[2]

وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۭ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰي مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫

(१२) तथा अन्ततः क्या कारण है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा मार्ग दिखाया है। तथा जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर अवश्य धैर्य ही रखेंगे। भरोसा करने वालों को यही योग्य है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये ।[3]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۭ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ⑬

(१३) तथा काफ़िरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे अथवा तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उनके प्रभु ने उनकी ओर वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन अत्याचारियों का ही नाश कर देंगे ।[4]

---

[1]उनकी इच्छानुसार चमत्कार के संदर्भ में रसूलों ने उत्तर दिया कि चमत्कार दिखाना हमारे वश में नहीं यह मात्र अल्लाह के वश में है।

[2]यहाँ ईमानवालों से तात्पर्य प्रथम तो स्वयं नबी हैं अर्थात हमें पूर्ण भरोसा अल्लाह ही पर करना चाहिये। जैसाकि आगे फ़रमाया :

"आख़िर क्या कारण है कि हम अल्लाह पर भरोसा न रखें ?"

[3]कि वही काफ़िरों के षडयन्त्र तथा कुविचार से बचाने वाला है। यह अर्थ भी हो सकता है कि हमसे चमत्कारों की माँग न करो, अल्लाह पर भरोसा करो, उसकी इच्छा होगी तो चमत्कार प्रदर्शित कर देगा, अपितु नहीं।

[4]जैसे अन्य कई स्थानों पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

وَلَنُسۡكِنَنَّكُمُ ٱلۡأَرۡضَ مِنۢ بَعۡدِهِمۡۚ ذَٰلِكَ لِمَنۡ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ⑭

(१४) तथा उसके पश्चात हम स्वयं तुम्हें धरती पर बसायेंगे ।[1] यह है उनके लिये जो मेरे समक्ष खड़े होने से भय रखें तथा मेरी चेतावनी से भयभीत रहें ।[2]

﴿ وَلَقَدۡ سَبَقَتۡ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا ٱلۡمُرۡسَلِينَ ۞ إِنَّهُمۡ لَهُمُ ٱلۡمَنصُورُونَ ۞ وَإِنَّ جُندَنَا لَهُمُ ٱلۡغَٰلِبُونَ ﴾

"तथा पूर्व ही हो चुका हमारा आदेश अपने भक्तों के पक्ष में जो रसूल है, नि:संदेह वे विजयी तथा सफल होंगे तथा हमारी सेना भी प्रभावशाली होगी ।" (सूर: *अस्साफ़्फ़ात*-१७१ से १७३ तक)

﴿ كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغۡلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِيٓۚ ﴾

"अल्लाह ने यह बात लिख दी है कि मैं तथा मेरे रसूल ही प्रभावशाली होंगे ।" (सूर: *अल-मुजादिल:*-२१)

[1]यह विषय भी अल्लाह ने कई स्थान पर वर्णित किया है । जैसे,

﴿ وَلَقَدۡ كَتَبۡنَا فِي ٱلزَّبُورِ مِنۢ بَعۡدِ ٱلذِّكۡرِ أَنَّ ٱلۡأَرۡضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ ٱلصَّٰلِحُونَ ﴾

"हमने लिख दिया ज़बूर में शिक्षाओं के पश्चात कि अन्ततः धरती के उत्तराधिकारी मेरे सत्कर्मी भक्त होंगे ।" (सूर: *अल-अंबिया*-१०५)

अन्य जानकारी के लिये देखिये सूर: *अल-आराफ़*-१२८ तथा १३७ । अत: इसके अनुसार अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सहायता की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बड़े दुखी हृदय से मक्के से निकलना पड़ा तथा कुछ ही वर्षों के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के में विजेता के रूप में प्रवेश किया तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्के से निकलने पर बाध्य करने वाले अत्याचारी सिर झुकाये खड़े आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नयनों के संकेत की प्रतीक्षा में थे । परन्तु आपने महान चरित्र का प्रदर्शन करते हुए لا تثريب عليكم اليوم कहकर सबको क्षमा कर दिया ।

[2] जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَأَمَّا مَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ وَنَهَى ٱلنَّفۡسَ عَنِ ٱلۡهَوَىٰ ۞ فَإِنَّ ٱلۡجَنَّةَ هِيَ ٱلۡمَأۡوَىٰ ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़ा होने से डर गया तथा अपने मन को इच्छाओं से रोके रखा । नि:संदेह स्वर्ग ही उसका ठिकाना है ।" (सूर: *अल-नाज़िआत*-४०, ४१)

(१५) तथा उन्होंने निर्णय माँगा,[1] तथा सभी उद्दण्ड अड़ियल लोग असफल हो गये।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ﴿١٥﴾

(१६) उसके समक्ष नरक है जहाँ उन्हें पीव का पानी पिलाया जायेगा।[2]

مِّن وَرَآئِهِۦ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِن مَّآءٍ صَدِيدٍ ﴿١٦﴾

(१७) जिसे कष्ट से घूँट-घूँट पियेगा। फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा तथा उसे प्रत्येक स्थान से मृत्यु आती दिखायी देगी परन्तु

يَتَجَرَّعُهُۥ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُۥ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ﴾

"जो अपने प्रभु के समक्ष खड़े होने से डर गया, उसके लिए दो स्वर्ग हैं।" (*सूर: अर-रहमान-४६*)

[1]इसके कर्ता अत्याचारी काफ़िर भी हो सकते हैं कि उन्होंने अन्तत: अल्लाह से निर्णय की माँग की। अर्थात यदि यह रसूल सच्चे हैं तो हे अल्लाह अपने निर्णय के अनुसार हमें नष्ट कर दे, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने कहा।

﴿اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ﴾

'ऐ अल्लाह यदि यह क़ुरआन आपकी ओर से अवश्य है तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप उतार दे।" (*सूर: अंफ़ाल-३२*)

अथवा जिस प्रकार बद्र के युद्ध के अवसर पर मक्का के मूर्तिपूजकों ने यह इच्छा व्यक्त की थी जिसका वर्णन अल्लाह ने *सूर: अंफ़ाल* -१९ में किया है। अथवा क्रिया के कर्ता रसूल हों जिन्होंने अल्लाह से विजय तथा सफलता के लिये दुआऐं कीं, जिन्हें अल्लाह ने स्वीकार की।

[2] صديد पीव अथवा वह रक्त है जो नरक में जाने वालों के माँस तथा खालों से बहा होगा। कुछ हदीसों में इसे «عُصَارَةُ أهلِ النَّارِ» (मुसनद अहमद भाग ५, पृष्ठ १७१) (नरक वासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) तथा कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म तथा उबलता हुआ होगा कि उनके मुख के निकट पहुँचते ही उनके चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी तथा एक घूँट पीते ही पेट की आँतें गुहय द्वार से निकल पड़ेंगी। أعاذنا الله منه

بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰

वह मरने वाला नहीं।[1] फिर उसके पीछे कड़ी यातना है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ ۨ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

(१८) उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अपने पालनहार से कुफ्र किया उनके कर्म उस राख के समतुल्य हैं, जिस पर तीव्र वायु आँधी वाले दिन चले।[2] जो भी उन्होंने किया उसमें से किसी वस्तु पर समर्थ न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۙ ⑲

(१९) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को तथा धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध से पैदा किया है। यदि वह चाहे तो तुम सबका विनाश कर दे तथा नई सृष्टि ले आये।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑳

(२०) तथा अल्लाह पर यह कार्य कुछ भी कठिन नहीं।[3]

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

(२१) तथा सब के सब अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।[4] उस समय कमज़ोर लोग घमन्ड

---

[1]अर्थात नाना प्रकार तथा विभिन्न प्रकार की यातनाओं का स्वाद चख कर वे मृत्यु की कामना करेंगे। परन्तु मृत्यु वहाँ कहाँ ? वहाँ तो उसी प्रकार स्थाई रूप से यातना होगी।

[2]क़ियामत (प्रलय) के दिन काफ़िरों के कर्मों का भी यही परिणाम होगा कि उसका कोई सुफल तथा पुण्य उन्हें नहीं मिलेगा।

[3]अर्थात यदि तुम अवज्ञा तथा अवहेलना करने से न रूके तो अल्लाह तआला इसका सामर्थ्य रखता है कि वह तुम्हें ध्वस्त करके, तुम्हारे स्थान पर नई सृष्टि उत्पन्न कर दे। यही विषय अल्लाह ने *सूर: फ़ातिर*-१५ से १७ तक, *सूर: मोहम्मद*-३८, *सूर: अल-मायद:*-५४ तथा *सूर: निसा*-१३३ में भी वर्णन किया है।

[4]अर्थात सभी महशर के मैदान (निर्णय वाले दिन जहाँ सभी एकत्रित होंगे) में अल्लाह के समक्ष होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ قَالُوا لَوْ هَدَانَا اللَّهُ لَهَدَيْنَاكُمْ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجَزِعْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَحِيصٍ ﴿٢١﴾

वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अधीनस्थ थे, तो क्या तुम अल्लाह की यातनाओं से कुछ यातनायें हम से दूर कर सकने वाले हो, वे उत्तर देंगे कि यदि अल्लाह हमें मार्गदर्शन देता तो हम भी तुम्हें मार्गदर्शन देते, अब तो हम पर व्यग्रता तथा धैर्य रखना दोनों समान है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं ।[1]

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ۖ وَمَا كَانَ

(२२) जब कार्य का निर्णय कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा[2] कि अल्लाह ने तो तुम्हें सत्य वचन दिया था तथा मैंने तुम को जो वचन दिया उसका उल्लंघन किया,[3] मेरा

---

[1]कुछ विद्वान कहते हैं कि नरकवासी आपस में कहेंगे कि स्वर्गवालों को स्वर्ग इसलिये मिला कि वे अल्लाह के समक्ष रोते तथा गिड़गिड़ाते थे, आओ हम भी अल्लाह के समक्ष वेदना से रोयें-धोयें, अतएवं वे रोयेंगे तथा अत्यधिक विलाप करेंगे । परन्तु उसका कोई लाभ न होगा, फिर कहेंगे कि स्वर्ग वालों को स्वर्ग उनके धैर्य तथा संयम के कारण मिला, चलो हम भी धैर्य धारण करें, फिर वे धैर्य का भरपूर प्रदर्शन करेंगे, परन्तु उसका भी कोई लाभ न होगा तब उस समय कहेंगे कि हम धैर्य रखें अथवा वेदना के साथ रोयें गिड़गिड़ायें, अब छुटकारे का कोई अवसर नहीं है । यह उनकी आपसी बातचीत नरक के अन्दर होगी । क़ुरआन करीम में इसको अन्य भी कई स्थान पर वर्णन किया गया है जैसे सूर: *मोमिन*-४७ तथा ४८, सूर: *आराफ़*-३८ तथा ३९, सूर: *अल-अहज़ाब* ६६ से ६८ तक, इसके अतिरिक्त वे आपस में झगड़ेंगे तथा एक-दूसरे पर भटकाने का आक्षेप लगायेंगे । इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं कि झगड़ा महशर के मैदान में होगा । इसका अधिक विस्तृत वर्णन अल्लाह तआला ने सूर: *सबा*- ३१ से ३३ तक में किया है ।

[2]अर्थात ईमान वाले स्वर्ग में तथा काफ़िर एवं मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे, तो शैतान नरक वासियों से कहेगा ।

[3]अल्लाह ने जो वचन अपने पैग़म्बरों के द्वारा दिया था कि मोक्ष मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाने में है, वे सत्य थे, उनकी तुलना में मेरे वचन तो पूर्ण छल तथा कपट थे । जिस प्रकार अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا ﴾

لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ۭ اِنِّىْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ۭ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٢﴾

कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं[1] हाँ,मैंने तुम्हें पुकारा तथा तुमने मेरी मान ली,[2] अब तुम मुझ पर अभियोग न लगाओ, बल्कि स्वयं अपने आप को धिक्कारो,[3] न मैं तुम्हारी सहायता कर सकता, तथा न तुम मेरी गुहार को पहुँचने वाले,[4] मैं तो (प्रारम्भ से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इससे पूर्व अल्लाह का साझीदार समझते रहे ।[5] निःसंदेह अत्याचारियों के लिये दुखदायी यातनायें हैं ।[6]

"शैतान उनसे वायदे करता तथा आशायें दिलाता है परन्तु शैतान के ये वायदे मात्र छल हैं ।" (*सूरः अल-निसा-१२०*)

[1]दूसरा यह कि मेरी बातों में कोई सत्यता तथा युक्ति नहीं होती थी, न मेरा कोई दबाव तुम पर था ।

[2]हाँ मात्र आमन्त्रण तथा संदेश था, तुमने मेरी तर्कहीन बातों को तो स्वीकार कर लिया तथा पैग़म्बरों के तर्क तथा प्रमाण संगत बातों का खण्डन कर अस्वीकार कर दिया ।

[3]इसलिये सब दोष तुम्हारा स्वयं का है, तुमने बुद्धि तथा विवेक से काम न लिया, स्पष्ट निशानियों को तुमने अपेक्षा कर दी, तथा खोखले दावों के पीछे लगे रहे, जिसके पीछे कोई प्रमाण नहीं था ।

[4]अर्थात न मैं तुम्हें उस यातना से निकलवा सकता हूँ, जिसमें तुम घिरे हुए हो तथा न तुम मुझे उस क्रोध तथा आक्रोश से बचा सकते हो, जो अल्लाह की ओर से मुझ पर है ।

[5]मुझे यह बात भी अस्वीकार है कि मैं अल्लाह का साझीदार हूँ, यदि तुम मुझे अथवा किसी अन्य को अल्लाह का साझीदार बनाते रहे तो यह तुम्हारी अपनी त्रुटि तथा अज्ञानता थी, जिस अल्लाह ने सारी सृष्टि की उत्पत्ति की थी तथा उसको नियोजित भी वही करता रहा, भला उसका साझीदार कौन हो सकता था ?

[6]कुछ विद्वान कहते हैं कि यह वाक्य भी शैतान का है तथा यह उसके भाषण का परिशिष्ट है । कुछ विद्वान कहते हैं कि शैतान का भाषण مِن قبل पर समाप्त हो गया । यह अल्लाह तआला का कथन है ।

(२३) तथा जो लोग ईमान लाये और पुण्य के कार्य किये वे उन स्वर्गों में प्रवेश किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे सदैव रहेंगे, अपने प्रभु के आदेश से,[1] जहाँ उनका स्वागत सलाम ही सलाम से होगा ।[2]

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۖ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾

(२४) क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पवित्र बात का उदाहरण एक पवित्र वृक्ष जैसा वर्णन किया जिसकी जड़ मज़बूत है तथा जिसकी शाखायें आकाश में हैं ।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

(२५) जो अपने प्रभु के आदेश से प्रत्येक समय अपने फल लाता है ।[3] तथा अल्लाह (तआला) लोगों के समक्ष उदाहरणों का वर्णन करता है ताकि वे शिक्षा प्राप्त करें ।

تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

(२६) तथा दूषित बात की तुलना गन्दे वृक्ष जैसी है, जो धरती के कुछ ही ऊपर से

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ

---

[1]यह कुकर्मियों तथा काफ़िरों की तुलना में सत्यकर्मियों तथा ईमान वालों का वर्णन है । इनका वर्णन उनके साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के कार्य अपनाने की रूचि तथा लोभ उत्पन्न हो ।

[2]अर्थात आपस में उनका उपहार एक-दूसरे को सलाम करना होगा । इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी प्रत्येक द्वार से प्रवेश करके उन्हें सलाम करेंगे ।

[3]इसका अभिप्राय यह है कि ईमानवालों का उदाहरण उस वृक्ष जैसा है, जो गर्मी तथा सर्दी प्रत्येक ऋतु में फल देता है । इसी प्रकार ईमानवालों के पुण्य के कार्य रात्रि-दिन के प्रत्येक क्षण में आकाश की ओर ले जाये जाते हैं, "***पवित्र वाक्य***" से इस्लाम अथवा لا إلـه إلا الله तथा पवित्र वृक्ष से खजूर का वृक्ष तात्पर्य है जैसाकि हदीस से सिद्ध है । (सहीह बुख़ारी किताबुल इल्म बाबुल फ़हम फ़िलइल्म तथा सहीह मुस्लिम किताबु सिफ़तिल कियाम: बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़्ल:)

الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

उखाड़ लिया गया। उसे कुछ स्थिरता तो है नहीं।[1]

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ ۚ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

(२७) ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ स्थिर रखता है, साँसारिक जीवन में भी तथा परलोक में भी।[2] हाँ अन्यायी व्यक्तियों को अल्लाह (तआला) भटका देता है, तथा अल्लाह जो चाहे कर डाले।

---

[1]"बुरे वाक्य" से तात्पर्य कुफ्र तथा 'बुरे वृक्ष' से इन्द्रायन का वृक्ष तात्पर्य है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है तथा तनिक संकेत से उखड़ जाती है अर्थात काफ़िर के कर्म का कोई मूल्य नहीं है। न वे आकाश पर जाते हैं तथा न अल्लाह के दरबार में स्वीकार होते हैं।

[2]इसकी व्याख्या हदीस में इस प्रकार आती है कि मृत्यु के पश्चात कब्र में जब मुसलमान से प्रश्न किया जाता है, तो वह उत्तर में इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं तथा मोहम्मद (*सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम*) अल्लाह के रसूल हैं। बस यही अर्थ है अल्लाह के इस कथन يُثَبِّتُ الله الذين آمنوا का (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: इब्राहीम तथा सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न: व सिफ़ाते नओमेहा वाब अरद मक़अदिल मय्यते अलैहि व इस्बातु अज़ाबुल क़ब्रे) एक अन्य हदीस में है कि "जब मुसलमान को क़ब्र (समाधि) में रख दिया जाता है तथा उसके साथी चले जाते हैं तथा वह उनके जूतों की आहट सुनता है, उसके पश्चात उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं। तथा उसे उठाकर पूछते हैं कि उस व्यक्ति के विषय में तेरा क्या विचार है, यदि वह ईमानवाला होता है, तो उत्तर देता है कि वह अल्लाह के भक्त तथा उसके रसूल हैं। फ़रिश्ते उसे नरक का स्थान दिखाते हैं तथा कहते हैं कि अल्लाह ने इसके स्थान पर तेरे लिए स्वर्ग में स्थान बना दिया है। इस प्रकार वह दोनों ठिकाने देखता है तथा उसकी क़ब्र सत्तर हाथ विस्तृत कर दी जाती है तथा उसकी क़ब्र को क़ियामत तक के लिये ईश्वरीय पुरस्कार से भर दिया जाता है। (सहीह मुस्लिम उपरोक्त वर्णित अध्याय (बाब)। एक हदीस में है, उससे पूछा जाता है «مَنْ رَبُّكَ ؟ مَا دِينُكَ ؟ مَنْ نَبِيُّكَ ؟» तेरा प्रभु कौन है ? तेरा धर्म क्या है ? तेरा नबी कौन है ? तो अल्लाह तआला उसे सीधा मार्ग प्रदान करता है तथा वह उत्तर देता है ربِّيَ الله (मेरा प्रभु अल्लाह है) و ديني الإسلام (मेरा धर्म इस्लाम है), و نَبِيِّ مُحمدٌ (तथा मेरे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं) (तफ़सीर इब्ने कसीर)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

(२८) क्या आपने उनकी ओर दृष्टि नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह के उपकार के बदले कृतघ्नता व्यक्त की तथा अपने समुदाय को विनाश के घर में ला उतारा ।[1]

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۖ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

(२९) अर्थात नरक में जिसमें यह सब जायेंगे, जो बुरा ठिकाना है ।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا لِّيُضِلُّوا عَن سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ﴿٣٠﴾

(३०) तथा उन्होंने अल्लाह के समान बना लिये कि लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटकायें । (आप) कह दीजिये कि ठीक है आनन्द उड़ा लो तुम्हारा स्थान तो अन्त में नरक ही है ।[2]

قُل لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ

(३१) मेरे ईमान वाले भक्तों से कह दीजिये कि नमाज़ को स्थापित रखें तथा जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है, उसमें से कुछ छिपाकर तथा खुल करके ख़र्च करते रहें, इससे पूर्व की वह

[1]इसकी व्याख्या सहीह बुख़ारी में है कि इससे तात्पर्य मक्का के काफ़िर हैं (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: इब्राहीम*) जिन्होंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत का विरोध करके बद्र के युद्ध में मुसलमानों से लड़ा कर अपने लोगों की हत्या करवा डाली थी । परन्तु अपने भावार्थ के आधार पर यह सामान्य है तथा अर्थ यह होगा कि परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने समस्त संसार के लिये दया तथा लोगों के लिये ईश्वरीय पुरस्कार बनाकर भेजा, तो जिसने उस वरदान का सम्मान किया, उसे स्वीकार किया, उस ने कृतज्ञता निभाया तथा वह स्वर्ग में जाने वाला (स्वर्गीय) हो गया तथा जिसने उस पुरस्कार का अपमान किया खण्डन किया तथा विरोध किया, वह नरकीय हो गया ।

[2]यह धमकी तथा चेतावनी है कि दुनिया में तुम जो चाहो कर लो, परन्तु कब तक ? अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है ।

दिन आ जाये जिसमें न कोई क्रय-विक्रय होगा न मित्रता एवं प्रेम ।[1]

يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خِلَٰلٌ ﴿٣١﴾

(३२) अल्लाह वह है जिसने आकाशों तथा धरती को पैदा किया है तथा आकाशों से वर्षा करके उसके द्वारा तुम्हारी जीविका के लिये फल निकाले हैं तथा नावों को तुम्हारे वश में कर दिया है कि नदियों में उसके आदेश से चलें फिरें। उसी ने नदियाँ तथा नहरें तुम्हारे वश में कर दी हैं ।[2]

ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ ٱلْفُلْكَ لِتَجْرِىَ فِى ٱلْبَحْرِ بِأَمْرِهِۦ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ ٱلْأَنْهَٰرَ ﴿٣٢﴾

(३३) उसी ने तुम्हारे लिये सूर्य तथा चन्द्रमा को अधीन कर दिया है कि बराबर ही चल

وَسَخَّرَ لَكُمُ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۖ

[1]नमाज़ स्थापित करने का अर्थ है कि उसे अपने समय पर तथा नियमानुसार एवं ध्यान तथा विनम्र होकर अदा किया जाये जिस प्रकार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की "*सुन्नत*" है । "*इंफ़ाक*" का अभिप्राय है ज़कात अदा करना, निकट सम्बन्धियों के साथ दया भाव प्रकट किया जाये तथा अन्य निर्धनों पर उपकार किया जाये। यह नहीं कि अपनी आवश्यकताओं तथा अपने ऊपर खूब व्यय किया जाये तथा अल्लाह के बतलाये हुए स्थानों पर व्यय करने से बचा जाये। क़ियामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न ख़रीद-बेच सम्भव होगा न कोई मित्रता ही किसी के काम आयेगी।

[2]अल्लाह तआला ने जीवधारियों पर जो उपकार किये, उनमें से कुछ का वर्णन किया जा रहा है। फ़रमाया आकाश को छत तथा धरती को बिस्तर बनाया। तथा आकाश से वर्षा करके विभिन्न प्रकार के वृक्ष तथा फसलें उगायीं जिनमें स्वाद तथा बल के लिये फल भी हैं तथा नाना प्रकार के अन्न भी, जिनके रंग-रूप एक-दूसरे से भिन्न हैं तथा स्वाद एवं सुगन्ध तथा लाभ भी भिन्न हैं। नाव तथा जहाज़ को सेवा के लिये लगा दिया कि वे तीव्र धाराओं को चीरकर उनमें चलते हैं। मनुष्यों को भी एक देश से दूसरे देश पहुँचाते हैं तथा व्यापार की सामग्री भी एक स्थान से दूसरी जगह स्थानान्तरित करते हैं। धरती तथा पर्वतों से स्रोत तथा नदियाँ निकालीं ताकि तुम भी पी सको तथा अपने खेतों की सिंचाई करो।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۝٣٣

रहे हैं ।[1] तथा रात-दिन को भी तुम्हारे कार्य में लगा रखा है ।[2]

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۗ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۗ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝٣٤

(३४) तथा उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुँह माँगी सभी वस्तुओं में से दे रखा है ।[3] यदि तुम अल्लाह के उपकार, अनुग्रह गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते,[4] निःसंदेह मनुष्य बड़ा अन्यायी तथा कृतघ्न है ।[5]

---

[1]अर्थात निरन्तर चलते रहते हैं, कभी रात को भी नहीं ठहरते तथा न दिन को । इसके अतिरिक्त एक-दूसरे के पीछे चलते हैं, परन्तु कभी भी उनमें आपसी टकराव तथा टक्कर नहीं होती ।

[2]रात-दिन उनका आपसी अन्तर जारी रहता है । कभी रात-दिन का कुछ भाग लेकर लम्बी हो जाती है तथा कभी दिन-रात का कुछ भाग लेकर लम्बा हो जाता है । तथा यह क्रम जगत के आदि से चल रहा है, इसमें बाल बराबर अन्तर नहीं आया ।

[3]अर्थात उसने तुम्हारी आवश्यकता की सभी वस्तुएं उपलब्ध करायीं, जो तुम उससे माँगते हो । तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि जिसे तुम माँगते हो उसे भी वह देता है तथा जिसे नहीं माँगते, परन्तु उसे ज्ञात है कि तुम्हें उसकी आवश्यकता है, वह भी देता है । अर्थात तुम्हारी जीविका की सभी सुविधायें उपलब्ध कराता है ।

[4]अर्थात अल्लाह के उपकार अंगणित हैं, उन्हें कोई गिन नहीं सकता । फिर कैसे हो सकता है कि कोई उन उपकारों के प्रति कृतज्ञता कर सके । एक हदीस में आदरणीय दाऊद अलैहिस्सलाम का कथन वर्णन किया गया है । उन्होंने कहा, "हे पालनहार ! मैं तेरी कृतज्ञता किस प्रकार अदा करूँ ? जबकि कृतज्ञता करना स्वयं तेरी ओर से उपकार है ।" अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "ऐ दाऊद ! अब तूने मेरी कृतज्ञता अदा कर दी जब तूने यह स्वीकार कर लिया कि हे अल्लाह ! मैं तेरे उपकार की कृतज्ञता अदा करने से भी असमर्थ हूँ ।" (तफ़सीर इब्ने कसीर)

[5]अल्लाह के उपकारों पर अनुगृहीत होनें में आलस्य के कारण मनुष्य अपने स्वयं के साथ अत्याचार तथा अन्याय करता है । विशेष रूप से काफ़िर जो पूर्णरूप से ही अल्लाह से विमुख हैं ।

(३५) (इब्राहीम की यह प्रार्थना भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे प्रभु ! इस नगर को शान्ति वाला बना दे ।[1] तथा मुझे एवं मेरी सन्तान को मूर्तिपूजा से सुरक्षित रख ।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ رَبِّ ٱجْعَلْ هَٰذَا ٱلْبَلَدَ ءَامِنًا وَٱجْنُبْنِى وَبَنِىَّ أَن نَّعْبُدَ ٱلْأَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

(३६) हे मेरे प्रभु ! उन्होंने बहुत से लोगों को मार्ग से भटका दिया है ।[2] अब मेरा अनुयायी मेरा है तथा जो अवज्ञा करे तो तू बहुत ही क्षमा तथा दया करने वाला है ।

رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا مِّنَ ٱلنَّاسِ ۖ فَمَن تَبِعَنِى فَإِنَّهُۥ مِنِّى ۖ وَمَنْ عَصَانِى فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾

(३७) हे मेरे प्रभु ! मैंने अपनी कुछ सन्तान[3] इस बंजर वन में तेरे पवित्र घर के निकट बसायी है । हे मेरे प्रभु ! यह इसलिये कि वे

رَّبَّنَآ إِنِّىٓ أَسْكَنتُ مِن ذُرِّيَّتِى بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِندَ بَيْتِكَ ٱلْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ

[1]"इस नगर" से तात्पर्य मक्का है । अन्य दुआओं (प्रार्थनाओं) से पूर्व यह दुआ की कि इसे शान्ति मय बना दे, इसलिये कि शान्ति होगी तो लोग अन्य उपकारों से भी सही रूप से लाभान्वित हो सकेंगे । वरन् शान्ति के बिना सभी सुख-सुविधाओं के उपरान्त भय, आतंक की छाया मनुष्य को व्यग्र एवं व्याकुल रखती है । जैसे कि आजकल के सामान्य समाज की दशा है अतिरिक्त सऊदी अरब के । वहाँ इस दुआ के प्रभाव से तथा इस्लामी नियमों के लागू होने के कारण, आज भी शान्ति का एक उदाहरण विद्यमान है ।

यहाँ अल्लाह के पुरस्कारों के अन्तर्गत इसे वर्णन करके संकेत कर दिया कि कुरैश जहाँ अल्लाह के अन्य पुरस्कार से अपेक्षित हैं इस विशेष अनुकम्पा से भी अनजान हैं, कि उसने उन्हें मक्का जैसे शान्ति वाले नगर का वासी बनाया ।

[2]भटकाने का सम्बन्ध उन पत्थर की मूर्तियों से सम्बन्धित किया जिनको मूर्तिपूजक पूजते थे, इसके उपरान्त कि वे निर्बोध हैं, क्योंकि वे भटकावे का कारण थीं तथा हैं ।

[3] مِن ذُرِّيَّتِي में مِنْ 'कुछ' के लिये है अर्थात कुछ सन्तानें । कहते हैं कि आदरणीय इब्राहीम के आठ पुत्र विभिन्न पत्नियों से थे, जिनमें से केवल आदरणीय इस्माईल को यहाँ बसाया । (फ़तहुल क़दीर)

فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُم مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

नमाज़ स्थापित करें[1] अत: तू कुछ लोगों[2] के दिलों को उनकी ओर आकर्षित कर दे ।[3] तथा उन्हें फलों की जीविका प्रदान कर ताकि ये कृतज्ञता व्यक्त करें ।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِن شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾

(३८) हे हमारे प्रभु ! तू भली-भाँति जानता है जो हम छिपायें तथा जो व्यक्त करें । धरती तथा आकाश की कोई वस्तु अल्लाह से छिपी नहीं ।[4]

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

(३९) अल्लाह की प्रशंसा है, जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल तथा इसहाक़ प्रदान किये, नि:संदेह मेरा प्रभु (अल्लाह) प्रार्थनाओं को सुनने वाला है ।

---

[1]इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज़ की चर्चा किया, जिससे नमाज़ का महत्व स्पष्ट होता है ।

[2]यहाँ भी مِـنْ 'कुछ' के लिये है । कि कुछ लोग, तात्पर्य इससे मुसलमान हैं । अत: देख लीजिये कि किस प्रकार दुनियाँ भर के मुसलमान मक्का में एकत्रित होते हैं तथा हज के सिवाय पूरे वर्ष भर यह क्रम निरन्तर बना रहता है । यदि आदरणीय इब्राहीम أَفْئِدَةَ النَّاس (लोगों के दिलों) कहते तो इसाई, यहूदी, अग्निपूजक तथा अन्य सभी लोग मक्का पहुँचते । مِن النَّاس के مِن ने इस दुआ को मुसलमानों तक सीमित कर दिया । (इब्ने कसीर)

[3]इस दुआ का प्रभाव भी देख लिया जाये कि मक्का जैसी निर्जल धरती पर जहाँ कोई फलदार वृक्ष नहीं, संसार भर के फल अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं तथा हज के अवसर पर भी जब कि लाखों अधिक लोग वहाँ पहुँच जाते हैं फल के प्राचुर्य में कोई कमीं नहीं आती ।

कहा जाता है कि यह दुआ खाना-ए-काअ़बा के निर्माण के पश्चात माँगी, जबकि प्रथम दुआ (शान्ति मय बना दे) उस समय माँगी जब अपनी पत्नी तथा नवजात शिशु इस्माईल को अल्लाह तआला के आदेश पर वहाँ छोड़कर चले गये । (इब्ने कसीर)

[4]तात्पर्य यह है कि मेरी दुआ का उद्देश्य तू भली-भाँति जानता है, इस नगर वालों के लिये दुआ से मूल उद्देश्य तेरी प्रसन्नता है तू तो प्रत्येक वस्तु की वास्तविकता को भली-भाँति जानता है । आकाश तथा धरती की कोई वस्तु तुझसे छिपी नहीं ।

(४०) हे मेरे प्रभु ! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख तथा मेरी सन्तान को भी,[1] हे मेरे प्रभु ! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَوٰةِ وَمِن ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ۝٤٠

(४१) हे हमारे प्रभु ! मुझे क्षमा प्रदान कर तथा मेरे माता-पिता को भी क्षमा कर दे।[2] तथा अन्य ईमानवालों को भी क्षमा कर, जिस दिन हिसाब होने लगे।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝٤١

(४२) अन्यायियों के कर्मों से अल्लाह को अनजान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक अवसर दिये हुए है, जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी।[3]

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ۝٤٢

---

[1]अपने साथ अपनी संतान के लिये भी दुआ माँगी। जैसे इससे पूर्व भी अपने साथ अपनी सन्तान के लिए भी यह दुआ माँगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना। जिससे ज्ञात हुआ कि अल्लाह के धर्म की ओर निमंत्रण देने वालों को अपने घर वालों के मार्गदर्शन तथा उनकी धर्मिक शिक्षा तथा प्रशिक्षण की ओर से कभी निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। जैसाकि अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी आदेश दिया।

﴿ وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴾

"अपने समीपवर्ती सम्बन्धियों को डराइये" (सूर: अल-शो'अरा:२१४)

[2]आदरणीय इब्राहीम नें यह दुआ उस समय की जब कि अभी उन पर अपने पिता का अल्लाह का शत्रु होना विदित नहीं हुआ था, जब यह स्पष्ट हो गया कि मेरा पिता अल्लाह का शत्रु है तो उससे अपने को अलग कर लिया। इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये मोक्ष तथा क्षमा की दुआ करना उचित नहीं, चाहे वह कितना घनिष्ठ अथवा निकटवर्ती ही क्यों न हो ?

[3]अर्थात क़ियामत की भयानकता के कारण। यदि संसार में अल्लाह ने किसी को अधिक अवसर प्रदान कर दिया तथा उनके मरने तक उसकी पकड़ नहीं की तो क़ियामत के दिन अल्लाह के हिसाब-किताब से वह न बच सकेगा, जो काफ़िरों के लिये इतना भयानक होगा कि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَ اَفْـِٕدَتُهُمْ هَوَآءٌ ۝

(४३) वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे[1] स्वयं अपनी ओर भी उनकी दृष्टि न लौटेगी तथा उनके दिल उड़े तथा गिरे हुए (शून्य) होंगे ।[2]

وَ اَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَ نَتَّبِعِ الرُّسُلَ ؕ اَوَ لَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ ۝

(४४) तथा लोगों को उस दिन से सर्तक कर दे जब कि उनके निकट प्रकोप आ जायेगा तथा अत्याचारी कहेंगे कि हे हमारे प्रभु ! हमें बहुत थोड़े निकट के समय तक का ही अवसर प्रदान कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण मान लें तथा तेरे पैग़म्बरों के अनुसरण में लग जायें । क्या तुम उससे पूर्व भी सौगन्ध नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं ।[3]

وَّ سَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَ تَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَ ضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ۝

(४५) तथा क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हमनें उनके साथ कैसा

---

[1] مُهطِعِين तेज़ी से दौड़ रहे होंगे अन्य स्थान पर फरमाया :

﴿مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ﴾

"बुलाने वाले की ओर दौड़ेगे ।" (सूरः अल-क़मर-८)

مقنعي رءوسهم "आश्चर्य से उनके सिर उठे हुए होंगे ।"

[2] जो भयानकता वे देखेंगे तथा जो चिन्ता तथा भय अपने विषय में उन्हें होगा, उनके कारण उनकी आँखें एक क्षण के लिये भी नहीं झुकेंगी तथा भय की अधिकता के कारण उनके दिल गिरे हुए तथा शून्य होंगे ।

[3] अर्थात संसार में तुम सौगन्ध खाकर कहा करते थे कि कोई हिसाब-किताब तथा स्वर्ग-नरक नहीं तथा पुनः किसको जीवित होना है ।

कुछ किया ? हमने तो तुम्हारे समझाने को बहुत से उदाहरणों का वर्णन कर दिया ।[1]

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِندَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ ۖ وَإِن كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ﴿٤٦﴾

(४६) तथा यह अपने चाल चल रहे हैं तथा अल्लाह को उन की सभी चालों का ज्ञान है ।[2] उनकी चालें ऐसी न थीं कि उनसे पर्वत अपने स्थान से टल जायें ।[3]

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفَ وَعْدِهِ رُسُلَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ﴿٤٧﴾

(४७) आप यह कदापि विचार न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वचन के विरूद्ध

---

[1]अर्थात शिक्षा ग्रहण करने के लिये हमने तो उन विगत समुदायों की घटनाओं का वर्णन कर दिये है, जिनके घरों में अब तुम निवास करते हो तथा उनके खण्डहर भी तुम्हें विचार तथा चिन्तन का आमन्त्रण दे रहे हैं । यदि तुम उनसे शिक्षा ग्रहण न करो तथा उनके परिणाम से बचने का प्रयत्न न करो, तो तुम्हारी इच्छा । फिर तुम भी उसी परिणाम के लिये तैयार रहो ।

[2]यह वाक्य अवस्था का वाचक है कि हमने उनके साथ जो किया वह किया जबकि उन्होंने अनृत को सिद्ध तथा सत्य के खण्डन के लिये विभिन्न प्रकार के बहाने तथा छल किये तथा अल्लाह को उन सभी चालों का ज्ञान है अर्थात उसके पास लिखा है जिसका वह उनको बदला देगा ।

[3]क्योंकि यदि पर्वत विचलित हुए होते तो अपने स्थान पर न होते, जबकि सभी पर्वत मालायें अपने स्थान पर हैं । यह इंकार के लिये है । दूसरा अर्थ إن مخففة من المثقلة के लिये गये हैं अर्थात नि:संदेह उनके छल तो इतने बड़े थे कि पर्वत भी अपने स्थान से विचलित हो जाते । यह तो अल्लाह तआला ही है जिसने उनके छलों को सफल नहीं होने दिया (जैसाकि मूर्तिपूजकों के मूर्तिपूजन के विषय में अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۞ أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدًا ﴾

"निकट है कि आकाश फट पड़े धरती में दरार पड़ जाये तथा पर्वत कण-कण हो जाये इस बात पर कि उन्होंने कहा अल्लाह दयालु की सन्तान है ।" (सूरः *मरियम*-९० तथा ९१)

करेगा ।[1] अल्लाह अत्यन्त प्रभावशाली तथा बदला लेने वाला है ।[2]

يَوۡمَ تُبَدَّلُ الۡاَرۡضُ غَيۡرَ الۡاَرۡضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوۡا لِلّٰهِ الۡوَاحِدِ الۡقَهَّارِ ﴿٤٨﴾

(४८) जिस दिन धरती इस धरती के अतिरिक्त अन्य ही बदल दी जायेगी तथा आकाशों को भी, [3]तथा सभी के सभी एक अल्लाह प्रभावशील के सम्मुख होंगे ।

وَتَرَى الۡمُجۡرِمِيۡنَ يَوۡمَئِذٍ مُّقَرَّنِيۡنَ فِى الۡاَصۡفَادِ ﴿٤٩﴾

(४९) तथा आप उस दिन पापियों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक स्थान पर जकड़े होंगे ।

---

[1]अर्थात अल्लाह ने अपने रसूलों से संसार तथा परलोक में सहायता करने की जो प्रतिज्ञा की है वह नि:सदेह सत्य है, उससे वचन का विरोध संभव नहीं ।

[2]अर्थात अपने मित्रों के लिये अपने शत्रुओं से बदला लेने वाला है ।

[3]इमाम शौकानी का मत है कि आयत में दोनों सम्भावनायें हैं कि यह परिवर्तन विशेषताओं के आधार से हो अथवा अस्तित्व के आधार पर । अर्थात इस आकाश तथा धरती के गुण बदल जायेंगे अथवा वैसे ही अस्तित्व बदल जायेगा, न यह धरती रहेगी, न यह आकाश । धरती भी कोई अन्य होगी तथा आकाश भी कोई अन्य । हदीस में आता है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

«يُحْشَرُ النَّاسُ يَومَ الْقِيَامَةِ عَلىٰ أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ، كَقُرْصَةِ النَّقِيِّ لَيْس فِيهَا عَلَمٌ لأَحَدٍ».

"क़ियामत के दिन लोग सफेद भूरी धरती पर एकत्रित होंगे, जो मैदा की रोटी की भाँति होगी । उसमें किसी का कोई झंड़ा (अथवा प्रतीक के रूप में चिन्ह) नहीं होगा ।" (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियाम: बाबुन फ़िल बअ्से वन्नोशूर)

आदरणीया आयशा ने पूछा कि जब यह आकाश धरती बदल दिये जायेंगे, तो फिर लोग उस दिन कहाँ होंगे ? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : सिरात पर अर्थात *"पुल सिरात"* पर । "लोग उस दिन पुल सिरात के निकट अंधेरे में होंगे ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल हैज़ बाब बयान सिफ़ते मनीयिर्रजुले)

(५०) उनके वस्त्र गन्धक के होंगे[1] तथा अग्नि उनके मुख पर आच्छादित होगी।

سَرَابِيلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ﴿٥٠﴾

(५१) यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये हुए कर्मों का बदला दे। नि:संदेह अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी।

لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾

(५२) यह क़ुरआन[2] सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इसके द्वारा वे सर्तक कर दिये जायें तथा पूर्णरूप से ज्ञात कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत योग्य है तथा ताकि बुद्धिमान लोग सोच समझ लें।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٥٢﴾

सूरतुल हिज्र-१५

سُوْرَةُ الْحِجْرِ

सूर: अल-हिज्र मक्का में उतरी तथा इसकी निन्नानवे आयतें हैं तथा छ: रूकूअ हैं।

अल्लाह तआला अत्यन्त कृपालु तथा दयालु के नाम से प्रारम्भ करता हूँ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(१) अलिफ़॰लाम॰रा॰, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं तथा खुले एवं प्रकाशमान क़ुरआन की।[3]

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

---

[1]जो आग से तुरन्त भड़क उठती है। इसके अतिरिक्त आग ने उनके मुख को भी ढांक रखा होगा।

[2]यह संकेत क़ुरआन की ओर है अथवा पिछले वृतान्त की ओर जो "ولا تحسبن الله غافلا" से वर्णन किया गया है।

[3]किताब तथा क़ुरआन मोबीन से तात्पर्य क़ुरआन करीम ही है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुआ।